

विच कहिं छं पुरुषलेखीकाओ ८ मा चुवन ॥ रिक् ८ मा
 लिगनाग ७ मावलेचाकभाकोर २ स प्रकारलेखिकादिनविचिनीनाईकाकोवीर्य
 ३६४ ७ पुरुषलेनाईकाकाकां ८ मावाडले अंकमालगारिनामिथोरानवलेकोशिक
 ७ पांतले ओ ८ मापिकेन दुवेस्तनमासमाडु रोमां वनयाकीपल्ल्याई हातिलेह
 अचरंपरिचंयकंतामथसंक्षिपनलेनितकेवं विलिखनुनयेव विचिणी
 ॥ १०॥ मनुष्यां देवतां नयेनर ७ केसंपरिरम्यवाडुल्लयानाजिलिखन्यापी
 ओरुवापिरददं सपुलका स्तुतेरोज दयम कर्वममथमंदिरकार
 करकिडापिनं उदिमानवम्या स्मरवारिनिर्जरवती कवीतविचप्रिभा ८
 न्यामिका जगमा कृतकथाया १० जग मा कृत कथा उदा अष्ट भीतिथिकादिन
 X विचिनीनाईकाकोवीर्य ३६४ ८

जगमा कृतकथा
513

॥ १०॥ पुरुषलेखीका कानतिग्रस्तन कविप्रिष्ठिः जग पेत रतिमा आत्रावामहा
 तलेकृतकथा उनु को ८ मानगलेको निचारभावे सगारिचंवनगनु २ स्तातरह
 ले ७ समितिथिकादिनविचिणीनाईकाकोवीर्य ३६४ त नायकलेनाईकाका
 केलीरस्तनमथ ४६ मदनगारे ७ कपांतथाकामीन्यानि जवामपाविकमलंका
 तममालोडयन् प्रीवापाणीरुहैलितं असनकेशुचंललो ७ ससंकर्षादाकवि
 ४६ ममथजलांरामां दसम्यांनिथी त गारसपरिरमागंडे फलकोचव
 उदसंज्वा चरकारा ७ गलेनख प्रयनकुसल कर्धनिमपंदसोः संक्षमश्चि
 उरावविलासकसल सीत्कारुतांप्रियां द्वादस्यांवरयानिविदुलतनं कंर्या
 नपुमाश्चिचिनि १०
 इ. साहे अंकमालगारिगांडस्थलमाचुवनगनु ओ ८ मा उवनगनिलेखीकाका
 इमिमिसवगान्याल्ल्या उनु खीकाकानमार चाकमानगलेकोरुससससस
 काकेससेच ७ आपाकानालीला उयेपुरुष द्वादसीतिथिमाविचिणीना
 ईकाकोवीर्य ३६४ हाई दुवलगराम १० १० १०

X कर्वसंविनिकादरतकाविचिकहिंछ नायकले दुईवाडुलेनाईकाका ई. साहे

४ अथ संविनि का हरन का विधिक हिंदू नाथ कले दुई वा हुले नाई का लाई सा है
अंक माल गार्. दांत ले स्त्री को ओ ८ लोक का विमा ला है न गले क ना उ न दु वे रत
मान ले ले सु स म को रि धि ना ले न ति या का धि न सं वि नी ना थि का को वि र्थ पात ग राई आ प्रा व स ग

॥११॥ अथ संविना चंद्र कला वा ड जा परि र भ्य म म म व रं मे दिस नि धि यं दौ न ले ख पाणि
जो या ल रा य य च न प धे व म म सं कु र्बि कु री तं क व द य म डे न न न ति या ल लं म म
न ग ज ला स्व की य व स गां क र्था न र सं वि नी म ११ व थ क पो ल ग ल का पी दे प्र य ह न
प्र ये न खो नि परि र भ्य क ला म पानः गा ढं वि म ज्य म ध ना ला य मा श नां री स ड व य
न र व रः किल म म मि १२

११ स्त्री का छाती मा गं ड स्थ ल मा गा ली कान सां उं मा ल ल सु स को रि अंक माल ग
रि ओ ८ मां च व न ग र्ज न ग मा सा है क त क त्पा उ न ए सा त र ह ले की डा ग र्थ स म्प नी का धि
न सं वि नि ना ई का को वी र्थ च डं छ डु वे स्त्री प्र य ल ई व ड त आ न न डं छ १२

पु स म ले स्त्री लाई सा है अंक माल ग रि ओ ८ मां च व ना ग र्ज न ग मा ह त व या ला ले वा
प मां च न ग का दु वे नि र न ग ले अ लि क त क त्पा उ न ए सा त र ह ले स म्प नी ग र्थ र का व
सि नि धि मा म वि नी ना ई का को वी र्थ च डं छ डु सि मे आ प ना व स प र्छ १३ ना थ क ले ना

॥११॥ परि र भ्य डं रं रं रं रं पि व ना धा न र ती व रां ग के न र व रै परि नी नि धा र य न स्व व स मं
नि थो न दो न स्त्री य म १३ वि लि ख न र रै सि रो व स म धा ८ ह्वा व क र्थो स मि क त
म परि रं व क पो ल प ग ना क त य ये दा कु नि थो म मो भु व १४ छ छ

को कं ८ मां ना व ले जी न र न मा सा है स मा त न मि सि म च र ग न्धा नि या की ल न्धा उ न
गं ड स्थ ल मा ल व न ग र्ज र व यो ध मि नि धि मा म वि नि ना ई का को वी र्थ च डं छ आ न न डं ई व स डं छ १५

आ प ना हा त ले स्त्री क त ग को मा है म र न ग र्ज ना नि धे पि उ यो क त क त्पा उ न ओ

आपना हात ले ली का नगा को माँ है मर्दन गन् ना नि दे वि उ चो कुत कथा उनु ओ
मा उ वन गन् मुसत मुसत खले कोषी मा को रि धि लन मर्दन गन् रन व मि का धि ह
सि सि नाई का को वि र्य उ हं न् नाई का को प नि व डत प धि पारो डं १५ ५५ प ले

॥१२॥ अथ हस्ति न्यां न यु कला मयन सयन मु सै मर्दिय त्रा नि मु लै तर सि त नि ज पानि
द त वा सो नी पि य म डु तर क र जा गे म लि धन पा र्थ व सान क लि त कु च ई नि ना व ल न
स्या न वा म्या म १५ न य ने परि उ वु व द यो र्ख रा धा तर ज स्म रा ल ध र च य न क
रि के लि मा न पे र ख व स सं नु ति यो धि पा ग ना म १६

नाई का काने न मा उ व न्या न का पि मा न पे र को र् न त ग मा हा त ले कु त क था
उ न र स्मा तर ह ले की डा ग र्ध च नुं द सी ते धि मा हा सि नी नाई का को वि
र्य उ हि आप ना व स मा आ उ डे डु वै ला ई व डत आ न न्य डं १६

श्री नाई ना ना तर ह ले अ क पा ल ग रि उ व न ग न् सी का छा ति स न र ति मा न रि ५
ई ति पा ति पा त ख ले को र् न त ग मा कु त क था उ न् स न का उ वा मा म लि ख लि ओ ल
ले गि ल गि ल्या उ न् र स्मा तर ह ले मु र त ग र्ध अ मा वा का र पू र्ण मा सि क धि न हा ति

॥१२॥ ना ना गि त न उ व ना नि र ख य न प्रा ये ण ती क्ष णै र ले क र्थो र स्त न मं ड लान्
रु गं सं द र पे र को लो उ क मा गा र स उ चुं का सि त कर सं न्य त र स यं उ क
प्रा ति यो च नि स ह ले उ च य नि रो हा सि नी म १७ ई त्प न ग लो व न्
प्रा नि रू प णं ना म धि ती प स्थं ल म् २

नी नाई का को वि र्य उ हा र् व न स कि न् १७ र स्म न ग र्ग ग र्ग
ना स न्द्र क ला को प्र का स नि रू पा ग न् यो यो श्री प्र क र ण स मा पू न जो २

अवसमादि प्रसपर मणी पुनः निखी जातिका लदा पाकहिं ६ छ अंगुलको
लिं नयाका पुरुष ससनाड नयाका जाग नौ अंगुलको लिं नयाका पुरुष पुरुष
ना काड नयाका जाग वाडे अंगुलको लिं नयाका पुरुष अश्वनाड नयाका जाग
अश्व

॥ १३॥ अथ भगवदे जाति नैवेन मरुत नैवेन निरूपन आरी है मर्दना कुस
स्य पुरुषा जेया सदावासी ये ये निना परिण हकर सदनवा रहै पां
प्रति के न मान जात्या त्याने नरा समा अष्टपमा अश्वना सथै सांग नाम
दिरदा मना अकथिता प्राकर मरि नि सर्वत १

छ अंगुलको नग नयाका स्त्री मणि नि नाड नयाका जाग नौ अंगुलको
नग नयाका स्त्री अश्वनाड नयाका जाग वाडे अंगुलको नग नयाका स्त्री अश्व
नि नाड नयाका जाग १

अवली वा नग लिं नयाका स्त्री पुरुष की सुरनयो य हो न निकहिं ६ छ अंगुल
को नग नयाका स्त्री मणी नी मास्त्री कोर छ अंगुलको लिं नयाका ससनामा पुरुष को सुत
मम ऊं छ स्त्री पुरुष डुवै जना लाई आम ऊं छ नौ अंगुलको लिं नयाका पुरुष नामा पुरुष को नौ

॥ १३॥ हरिणी समयो दद्या श्वयो समयो कशरीणी च गायो न वली
हयस्वर द्यो नितरा प्रीति खंगसंगरे २

अंगुलको नग नयाका स्त्री अश्वनामा स्त्री को सुत पनी ममनामा जाग वाडे अंगुलको
नग नयाका स्त्री हस्ती नी नामा स्त्री कोर वाडे अंगुलको लिं नयाका स्त्री अश्वनामा पुरुष
प को सुरनपनि समनामा जाग डुवै जना व डेत आन न पाड छ २

उक्त जग कोर लिंग को निनतिन अंगुल धादि वडि इनाही योग्य न नया लोभुत क हिं
छ अंगुल को नग न या की म गिना मासी कोर नौ अंगुल को लिंग नया का हृष प को ह
नामा कहिं छ नौ अंगुल को नग न या की अश्वना मासी कोर वाहे अंगुल को लिंग न

॥१४॥

हरीणी हृष मं ततथाश्विकागुगं बोधपिनिदयं रते गुरु
मीमशकं द्विषि हृषं सप्तमेतद्विदयं गुरु नीचकम ३

अश्वना मा पुरुष को सुरत पनी उचुना मा कहिं छ नौ अंगुल को नयाँ की अश्वना
मासी कोर छ अंगुल को लिंग नया का शशना मा पुरुष को सुरत नीच नामा कहिं छ वाउ
गुल को नग न या की हस्तिनी ना मासी कोर नौ अंगुल को लिंग नया का हृष ना मा पुरुष को सुरत
नीच नामा न या की जा ह

हो

अवली पुरुष का नग लिंग को छ अंगुल को धादि वही पनी लिंग अति सये पय न या की सुरत न
हिं छ छ अंगुल को नग न या की म गिनी कोर वाहे अंगुल को लिंग नया की अश्वना मा पुरुष को

॥१५॥

गुरंगी हृष योगे न रत म गुरु क विदु हस्तिनी
शशयोश्चाथरतं म्यापति नीचकं ४

उत्तर अति उचुना मा जा ह वाहे अंगुल को नग न या की हस्तिनी ना मासी कोर
छ अंगुल को लिंग नया का शशना मा पुरुष को सुरत अति नीच जा ह ४

समनामा सुरत १ उच्चनामा सुरत २ नीचनामा सुरत २ अत्युच्चनामा सुरत १ अतिनीचनामा
 सुरत १ ई सर्वे सुरतविषय समनामा सुरत उत्तमजात उच्चनामा दुई प्रकार को सुरत मवाजातु की
 नामा दुई सुरत अवमजातु अति उच्चनामा सुरत अति नीचनामा सुरत अति अवमजातु पक्षि की को

॥१५॥ मत्रप्रशम्यं मुतां ममत्वाद् द्वयं मवा ममेव विद्यात् नीचे
 वमेत्युच्चमथाति नीचमत्वं न निदां कविति प्रविष्टं ५

निर्भं जगका नेपले मगी अथा हस्तिनी इती नने वडे छत्र तसौ चित्री एी स्त्री मापनि नम
 वा नेपले मगी अथा हस्तिनी एति ने वडे छत्र सखि निमापनी जगका नेपले मगी अथा हस्ति
 नी इती नने वजातु हस्तिनी स्त्री मापनी जगका नेपले मगी अथा हस्तिनी इति प्रकार का ने वडे छत्र निमातु ५

श्री हठका जगमाथो वेर नयाका मवा मवल नयाका अवि कवल नयाका इति नप्रमार का के मिड
 उद्य थोरो वल नयाका क्रिमि नयाको नम नयाकी स्त्री काथो चिला उद्ध मवा मवल नयाका क्रिमि नयाको न
 नयाकी स्त्री मवा मे चिलाई उद्ध अवि कवल नयाका क्रिमि नयाको नम नयाकी स्त्री का अवि के चिलाई उद्ध

॥१५॥ कनयो रुधिरौ दुवा द्वि वाल धुम वा वला मवा लये जनपति वला सुसा लो वडे क दुर्वनि
 ता जनपति हे पुमा गहि नलिगे नमा वडे नो पमा मति अतो ननी वल मे गो गुष्टि गच्छति यो पत ७

ई जस स्त्री वल नि अंगुल को जगमा छ तस नवा धुलि लो नयाका प्रवसंग सुरत ड विलाई मदीन
 न तस का वल लो न प्रमा लो लो नयाका प्रवसंग सुरत ले श्री हठका नी पों उदै नत्र ७

श्री हरका नमो मया अति कोमल दुःख तसकारण लेसा नमो मया कीर्ती को अवि क प्रमाण मया
 को लिंग मया का पुरुष संग का मुरत मापनी श्री हर सुख पाउ देन ८ जग का वसेवर प्रमाण मया को मोरो ८ री
 नया का लिंग ले श्री हर का नमो निव विलाई मोरि दिनु ह नाना प्रकार का मुरत का कला का मया जग्या लेना न
 वरा मया नारि मया मयंत को मर विदु अति प्रमाण लिंग न नहि ना सां सु पंज वेत ८ सम प्रमाण
 लिंग न स्थूल न मुद न च समय न ल क ड नि सं दयं अ मुद न दुद न काम के लिंग कला ने न सु प प
 नि वि वे र्गो विरु क काम मलिला व सी कुधी न म गी रु १० नारी विरु क कु मी प्र जलार ता ते
 मयं करो नि व ड वला न रो दने व वै कल मी नि मु क लिला त चारु ने ना स को लिंगो कि म पि गो दु म नि
 प्रमाण ११

मपे ॥

तर ह का मया ले श्री लाई सुख गरा उदा श्री को वीर्य पनी उरुं छ न्या श्री पुत प का व स पनी ऊं छ १० वीर्य
 ऊं द का अ नं द नाम न जै श्री हर ना था ऊं पनि ग ह न म डर के हि व च न नी ल ह न आ नं द लो अ नु प्रा
 म ह न आं पा थो रो वि म लं छ न प ह न व ड न था क ना ले के हि प नी रो द ग न न स क न्या ऊं छ ११

५०

अव मुरत का मया ई स मे प का हिं छ न श्री पुत प डु वै का चै र वे र मा वी र्य पात डु न १ श्री का मा त्रै चै र वे र मा वी र्य
 पात डु न २ पुत प का मा त्रै चै र वे र मा वी र्य पात डु न ३ श्री पुत प डु वै का डिं चै र मा वी र्य पात डु न ४ श्री

५१

चिर म च म श्री धु सं न वा नूर ना र्गो सु वि म हित च्य न समय प्र मिति प्र मे द तो न व र्वे वं मुर न
 म मिति १२ च डु म च म मं द र्या श्री वे गो सु वि दु म थो क्रि पा च वि वि च यो क ल धु म च य नि
 रो व या १३ अत्रा पि काल ने ये न न व चार वं स मु ह ये न स प्र वि म ति मं च हि कि मी तं र ति वं

का मा त्रै डिं चै र मा वी र्य पात डु न ५ पुत प का मा त्रै डिं चै र मा वी र्य पात डु न ६ श्री पुत प डु वै का चो डो वी र्य
 पात डु न ७ श्री का मा त्रै चो डो वी र्य पात डु न ८ पुत प का मा त्रै चो डो वी र्य पात :

अवधपलामा प्रथम काल सायक हि छन सूरसभा व उचो निधा मीज बलि या वाहे जया का प्रतिफ
कीका तयोला हो पुष्टे हे नया का कछुवा का अलो पोर बा को पाता नया का ठुला स्थि उमा
था नया का लाल हने वारा यम च लचित मो अंगुली की सिंग नया का थला पुत पट्ट पनयाम नया का जो १० अ

[illegible]

व अ उ व नामा पुरुष कालमि सा कहि छन सामा मोटा के स नया का संचल वडा वडा ने न नया का जोति स्वमा
वका गलो दो म कान भुख र ति पात लो सा न नया का लो न स नया का पृष्ठ छति सामा वा ऊ नया का निडा वरु
त आ लो स्व नया का नख गोडा पिरो डायो डोरे ड नया का भंभिर वचन वीर न्या १८

अधिकविद्या नानातरहेका पुरत मा अशक्त नैकै हूँ कहै सुगान्या तामा औ सा नयाका मोहा मोहा स्त्री कन
संनोभा ॥ रुचा उन्मा अधिक आहार नयाका उत्तरवि ॥ किहि उन्मा खारका जो सो गं स नयाको चरे
वीर नयाका बाहे अंगुल को लिंग नयाका यका पुरुष अश्वनाम नयाका नाउ १२ अवलगीना
मा स्त्री का लक्षणा कहि हूँ ॥ धं नां धं नां धुं धुं रिया का ते स नयाकी जमाने देखि न्या स र नया

॥१६॥
 चण्डा खड्गमेरता ध्वनितं दीर्घं प्रलिये वाचं स्फुरात्वीरनिलालासावकं भूजोभात्यानुप
 पन्थाविता मरिहारावीगंधिमन्मथजलप्रायासया वाकुला आदिसांगुलासम्प्रीतचंद्रमा
 लिंगमयविभूति १०० अथ मन्त्रीतक्षणां साद्राकुंचितकुंतला ममतिरातन्वी सुखं मलनी पु
 र्वेदिवरलोचनाय विवरध्याना चण्डेयरी आरुको वरपानिषादुपालापी नोत्कामाल
 माप्राय कोमलवल्लीवर्ध उज्जवावीलीला मड अति २०

कि पतली उद्यान नम्र ल्या का नील कमल का जलाने न नया की नाक का पारा माना नया की साउ चरि
नया की जो हतवधा ला पैला ला एतिला ल नया की ति आ नग प्रति पु नया की अत्यंत वीर
लता वा हे नया की गं ड सुख ल र कान एति चाक ला नया की २०

इस वडो नयाकी नरम वैह की जो बिल काज सो न बुरस्वर नयाकी सरनामा अदि कला नीम न
नयाकी कमल काज सो न नयाकी पीर नयाकी थोरो आहार चाकला नाक सो न जो लाहति
काज सो हिडारि छ अंग लाहिरो भगन याकी यति स्त्री नगी नाम नयाकी जो नु २१ अ

इष्यालः सुकुमारिकापिकरवासांतरनेलपयविप्रत्यंभुमेजं जु॥ समयनस्यंदंतपालासिनालु श्रोलि
सरलांगुलिगजगतिश्च चन्मनोहारिनिज्ञेयानिष्पडगुले परिमितं ह्यं वहंति गी २१ अ
॥ १२५ ॥

॥ १२० ॥ ... २१ अ ... २२

... २२ ... २२

... २४ ... २४

... २५ ... २५

... २६ ... २६

संनन ख. नेत्र. बिहना जयाकी. ममानले पुसन डेचा पतिमा वडो प्रीति राखन्या. त्याम
गीकी. मितल. कंवल तो ७४ जग जयाकी. हलीली कप प्रकृति कि सर्वेस्त्री माझे ४ जो ७
गोरेसरि जयाकी. नेत्र नख तो जयाकी. सरा माको वगर्था. दाणमा पुसन डेचा स्वभाव की ललीचा व

॥ २१॥
X

सुग्रीमा वंदन खली. चान धुग्या माने नता प्रयत मे ७४ उरागा. त्यामथ सीत मृदु मांस व
७ खर वा प्रोत्ता कफ प्रकृति रे वरापुर वी हे सावित्रला गोमोगी दो लो वसा मिजा. क्ष
७ जो वा पुसना चपिन ओणि पयो च ७ विनर्मि धर्म सलिल विप्रगं विमुमु दिवा. हे
धको जवांगी च कुसला मुते मृदु. ७ वातला गुणो रांगी लक्ष के शी पला पिनी. चंचला
वडे मोजा चहा गुणाणी जलो चना ७

१ संन ७४ जयाकी. हलीली पुन प्रकृति की जातु ७ अ पा कां व जलो गंध आड न्या पति
ना जयाकी सुनर ७ विने जयाकी ७ कुली तो तो तो जग जयाकी. सुरत माचां डे जीय पात म लाडन म कि न
ना ७ लीली पित प्रकृति की जातु ७ सा हो अंम जयाकी. रूप के स जयाकी वहुत पो लया. चंचल स्वभाव की ७ ७
वे रि आहार कालान खर नेत्र जयाकी ७

काणी प्रसो वशी जयाकी. सुरनम वडा कठिन ले वी र्य पात गराई सकि न्या. गाई का जि नो जलो ख कम
गनित्र जयाकी. हलीली वात प्रति की अं वम जातु ७० अवदेवता गंध व वरु का जलो स्वभाव
याका. हली हेर का लया का हे ७ पुसन उखे कमल का जलो सुगंध आड न्या सरि जयाकी. संतोष पुन

॥ २२॥

स्याम वसु सर्वाणि च सुर मे कठिनां न श गो नि ह्वा न खर स्थं विनर्मि मधना लयं ७० अठे
धसत्वा धाड्यते पुसत्र वक्रां गुजसौर जागि संतोष मुक्ता ७ चित्त म ध्या. प्रिय वया मूरि
जना वना द्या नारियु का किले वसत्वा ७१ संगीत ली लार सि का तिसि ला मुगं हि मा ल्या धिरु चि
७ जांगी. विहा सि नि निर्मल चातये पांगंध सत्वा वनिता प्रिये ७२

पवित्र कर्म माकु सत सर्वे लाई नि को ला प्र न्या वचन वी लया. जन वन ले पूर्ण जयाकी. यस्ती लु
लु देव स्वभाव जयाकी जातु. ७१ गां डे न व जा डे ना मा व डोर स जयाकी. वडो उ त्र म सिल जया
की ७ गंध माला फल तवा ड न्या नाना तर ह का विलास गान्या साफ मुं डर मडे ना कपरा पहिरि ७ ७
न्या. सुं पर अंग जयाकी. हलीली. गंध व स्वभाव की जातु. ७२

संभव १९०२३ वा १ मिति. चैत्र वदि. दि १५ ३

ज आन जयाकी मधमांस तवा ड न्या ७ ७ लन गीरी दे ह. जो वी स्वभाव जयाकी. मोग के वडन ई ह्वा
राध न्या यस्ती ली पक्ष स्वभाव की जातु ७३ धर्या आया काम गुण के समान गयी. संगिनी हर संग
प्रति राप न्या निर्मल चित्र जयाकी. नाना तर ह का वत ७ प वा स गयी. यस्ती ली मनुष्य स्वभाव की जातु

रावनापक्षात्त्रावक्ष्य मावकी जाउ १३ धरमाकाकाभगुय कोसमानगन्या संगितो हरसंग
प्रतिपत्त्या निर्मलचित्र मयाकी नानातरहेकावतपवासगन्या यसीस्त्री मनुष्य स्वभावकी जाउ

२॥

अपेतालजामधुमांससत्तापीनसनीचंपकोरेये हा रोषान्विता संतत मोगवांछापीता
कविदेखलूदाक्षसत्ता १३ आतिथ्यसत्तादिप्रवचनावागुयमीणी निर्मलचित्रकनि
नानावर्तैरतिचयाप्रपासंमनुष्यसत्तापरिकीर्तितासा १४ दुष्कारिणी कुत्सितनूरीमोज्या
हेहालवासापरितपूगात्रि खवति कृष्णसचिकारवक्रामालिनापुनैतिपिसाचमत्ता १

१४ दुष् आचार मयाकी ननि कोर वैर नोजनगन्या पीसाहास्वभावकि मधयानगन्यातां
रेरमयाकी छोपेयेह कालोवर्ष नगमो अख मलिनसभाव मयाकी यसीस्त्री पिसाचस्वना
की जाउ १५

अगनाई मयाकी चंचल चित्र मयाकी वारंवारचासफेन्या चैरैजंमोडन्या अवि कनिद्रा मयाकी
यसीस्त्री नागस्य भावकी जाउ १६ विनाकारण मयमानि चित्र चंचल मयाकी वहुतैरां कामान्या
मयाकी कैसेको विवासनमान्या वारंवारनेत्रधुमाई न्या पलट्टी काकस्वभावकी जाउ १७ अत्यंत

॥ २२ ॥

व्याकुल त्रातसीला चसोछासंवहुजंमते निष्वासकाचसतंतनागसेवेति सोचते १८
उद्देगं निष्कलंकपीनेत्रं मंत्रा मयेन्मुक्त अप्रतिताचसतंतकाकसवेति सोचते १९ अ
त्यंत चपलायागुसकुनो दुःखलोचना येससो गरकाचकपिसवेति सोचते २० स्वभा
वा दुष्कृता कपानिविप्रियारायेव भाषते अपेतरागाह्यानां दोषरसवेति सास्मता २१

चंचल स्वभावकी नेत्र वहुत चंचल मयाकी जगारा हुंदा पलट्टी काका यसीस्त्री वायरस्वभावकी जा
उ २२ अकालाई ननि कोलागु न्या दुष्क वचनमात्रे वीर न्या नो हांउ न नुनमानि की नमान्या
रसास्त्री गर्जनस्वभावकी जाउ २३

मगीप्रकृतिनातिदेवप्रकृतिसत्त्व कफप्रकृति रसमासवैवावदि याआयाकी उत्तमजाउ कैसे
मगीप्रकृतिनातिदेवप्रकृतिसत्त्व कफप्रकृति रसमासवैवावदि याआयाकी उत्तमजाउ कैसे

मभीप्रकृतिना निवेव प्रकृति सत्त्व कफ प्रकृति रस मास वैवा वदि या आया की कर्म जानु कसे
का धरि या माया आयो न न्या कफादि प्रकृति ले जलो आयो सो प्रकृति २० अवली कानि
११ नाका काया काहे छन्द पित्त का धर सचे वास वेसा स्त्री हय को संग आत्मा पति को परे

॥ ३३ ॥

अति सत्त्व दो ये वै नारिणा मत्र मायिना प्रधानं प्रकृति जे पाने प्रसर्व प्रपणितैः २०
अथ नारि नास हेतु ल्यते पित्त सदन विवात संगति पुंश्च लिनि दे प्रवसनम
निपत्युर्वी र्वक लेथ सच वसति रथ च पुं मे ईष्ट वी ले स्ववसं सति रापनि जहते योषि
नां नास हेतु २१

सवास उहो समपा उन्नी ले वदि या गद्य पवि प्रपले नि को न मानु हुष्ट प्रपका हिया
कवहु आफै प्रपका हुन को नै प्रकार ले जिवि जान चलन यती तरह ले स्त्री हय आपुर
पति छुडि वेसा हुन २१

अवली हय ले प्रपले योषि विरक्त कुन् या काया कहि छन्द पान गोलो न दिना अति अध निपति दुनाले
अ स्त्री मात पद ने आपुर संमान प्रिति नाना पति दुनाले मत्र यंत्र काया दुनाले पति सा चित्त जो रिदिनाले मात को
मा मा ने वदि या दिना या य के वर मात्र सं नो मा ना अघि पति सं नो मा ना पति दुनाले पति दुनाले रोमा हा दुष्ट

॥ ३४ ॥

अथ वैराग्य हेतु पांकारि राधा धनि मान राग विर हयि या दि या ल्यते माति या स मय ज मा धि ने पन सो का पी डा
यपि नरिणां तु मा धि नि प्रपुष का दि नत संक ना पो या या द हया प्रसा नि व नि ना वेसा पुच सदा २२ अथ
विरक्त लक्षणां न्यायि पत्यति ने तीर नो न सं प्रप हति वियो मे सुप मा प्रोति स पो मे चा ति सि धि २३

लोपति दुनाले अधिक को र मन नया को पति दुनाले आ कृति के दिन विरई दो पलाई पोउ ना ले स्त्री लाई पति वे
वि वैराग्य हेतु २२ अवकि रात्री का ला क्षं गुण कहि छन्द प्रप का सा ने हे दिन प्रपले के हि सो व प्रप का
दी उ तर प्र नि दि न पति संग रह य न न मा दु ख मा हे पति संग न न या मा लु ति नै र हे २३

विष्णु नामा पति संग रह य नि दा य के यो हे प्रप ले च न न ग द ति प्रप ह के पति का नित्र को हे य गे दि पति

विष्णुनामापत्ति सगरहं दानिदायां योर्ध्वे प्रहपले च वन गदगुपपुष्टे पतिवामित्रको देवगोर्ध्वपति
 गन्धाकासमानको पनिई द्वागर्धिन यस्तीस्तीकनआपुमाविरक्त नेवाकीजागु २४ अवचाप्रकारको प्रितिका
 छ नैसर्गिकीनामा १ विषयजानामा २ समानामा ३ आन्यासिकीनामा ४ चारप्रकारका प्रिति ५०० न २५

॥२४॥

सप्यानुपमतासेतेवदनं माहिं पुविता तन्मिच हे विमानं उविरक्तानानि वां हुरि २४ अथपि
 रच्यते नैसर्गिकीविषयजानामा चान्यासिकी तथा उगुविचितिविद्विद्विपत्यो प्रितित्तमा २५ उ
 न्यासविषयमा चान्यासपत्यो मरुजाचया लांडानि गड उताचप्रिति नैसर्गिकी मता २६

अवर्द्धारप्रकारका प्रिति कोलसाणका हिस्ती प्रहपकात्वमा वैलेवस्याको साहुवा विमाको विद्यो महुं
 स्ती प्रहप दुवै कलहु २७ हुन्या अरको नै उपाते पनि मित्तिकीन्या यस्ती प्रिति नैसर्गिकीनामा जागु २८

मात्ता चंदन नानातरह ॥ हुनाक परादिनाले जयाकी प्रिति विषयमा जागु स्तीले प्रिति राख्या प्रहपले
 पनि प्रीती राखन्या प्रहपले प्रिति राख्या स्तीले पनि प्रिति राखन्या यकले छोड्य अर्कावा पनि हुन्या २९

॥२५॥

मात्ता चंदन जो मा हो वी धये चिचितागुया प्रिति विषयजा प्रीतासम योगेसमासमा २० आ
 खेले देव पूजाये केलिसंगीत कर्मसु अम्यामोमा पाउ विषयती साग्यासिकी मता २६

स्ती प्रीतिसमा जागु २० सिकारखेलदा मा देवताका दर्शन गज जादना मरु जकले खेल्दामा गो
 न्याममा मा वारने ८ हुनाले वजाकी यस्ती प्रिति आन्या सिकीनामा जागु २६

धनामनयाकीजाउमर्मनित्रिद्विजानजिदनापूजाचदनामानादिह उठ तोनाडिसवैवीरलोह
 र्गिउंछे तांहांवाजोउंछे सोवीजउखाकोहोमनिजाउ ३५

अवसहजैलोपगहीकनआपूवसमापन्यास्त्रीकहिंछन् रोगहस्तेउंछेतायाकीवैरेदिनोवेषिपतिको
 विरहमयाकीमेहादिनकीगुरकपारिहमेहाउपरकीगर्मिणीकनज्वरलेअपंतपिउितामयाकीवकृतआसत

॥ २६ ॥ अथास्वासाचोचते रोगादिआंतदेहाचिरविरहवतिमासमात्रप्रसूतागर्जीलस्यचव्यज्वरउत
 मगुकायकमानप्रसंगा स्नातापुष्पावसानेनवरतिसमयेमेघकालेवसंतेप्रायः संपन्नरामामगसि
 अनुपनात्वात्पनसाचैनेसो ३६

नयाकिरजमैचारेदिनकीउपरवाहुदिनपर्यंतकीरुतिनरहकात्रीहरताईवीर्यपातमराउनसकिंछेन
 ननाईवासितपहिलेकापुरतमाभेधलाग्याकावेलाभावसंतमगुमापुरतमाअतिलाग्रनयापनिचांडेवी
 पातमराउनसकिंछे ३७

एकेरातमाहुईतीनवेरपुरतमापहिलापुरतमाचैरेरेलेहीकोवीर्यपातहुंछे दोस्त्रापुरतमाचांडेवीर्यपातहुं
 छे तेसोचौथापुरतमेविनरुनचांडेहुंछे जोछप्रत्यक्षमन्यापहिलापुरतमाचांडेवीर्यपातहुंछे दोस्त्रापुरतमेचैरेलेवीर्य
 पातहुंछे तेआचौथापुरतमेवीरुनरुनविलोहुंछे जोछ ३८ अवसुरतकीईछागर्वाहीचिह्नकहिंछे अ

॥ २७ ॥ कर्पयुचेप्रथमेत्यजावाश्चैरेतप्रिवनितालनते सीधुद्वितीयेवृत्तनूरिमावापुंसः क्रमोपविषी
 तयुक्तं ३९ अथसुरनामिषविहानि संग्रहतालकानुक्रस्तनयुगंधद्वेषावाछायेद्वैतेनाया
 वरंसेवविमैसंजातलज्जाहाणं प्रायश्चुं वतिवालकनिजयपु संजं मेतेजं मेते तथाचापित्वादिपस्य
 निचदेर्जलहसत्यावाह ३९

वरदसबावरनसजातलजासिए प्रायशुंवातिवालकनिजयपु मंजं नैते जं नैते रथावापित्सादिपस्य
निचयेर्लहसत्पादा ३८

पना अलकफेसवोलेखे बारवारस्तन ठा कागैर्हि यं नले औठपवोड हेला जमान्या गीय कक्षालाग्या
कोकामपनि छोडिदि हे आपनावीवसाकावालकको सुंवनगेहि आंमनोचहे जं नाईगेहि वापेहे कागैर्हि
आपना कासिहे हे नायकको भुखेपनी मात्रवडा आधले थोडो हां स छ ३८

संगीनी हेतलाई अंकमालगेहि मिठावचनवीलहे आपुपनी थोकसो ननिवेहि सावहे कोसेले
यानेपन्याओसरण्याकेहि करापनीगेहि हे साईयेभुखगेहि विनाकारसाला जमान्या जस्तोगेहि कोसेहि

॥२०॥

आलिगेस्व सखीपियं प्रलपतिप्रत्युग्रं वाचते प्रवक्तुं न च माषते स्मितमुखी श्रीडा कृष्णा वारेये
व्याजेनेव विलंबते प्रकृतते मोलौचकई धनं नारीणां भुलस्य हं वज्रमै जयेति जावेः सध ३८
इत्यनंगरैसा माया चमनिरुपणां ना चतुर्थ स्थलम् ४ ४ ४ ४ ४ ४

डडाडुलदसंगैहि डंनको नैछसलेपनी परवछ वन्नि कयाउं हे जसलाई देखिखी हतयसोचसागेहि रं
सलेसंगभुलकोईछ अवस्य राया ननिजानु ३८ असंगरैसा माया सामान्यत्वभावहिना चतुर्थ स्थल समा
प्रमयो ४४

अवदेसदेसकास्त्री हतको स्वभावकहिछ रंगविरंगकागहनाकपरातंदनमालापहिरना पवित्रक
माकुसल उतमसील जयाकी नखेलको मार दतलेववा ऊँ औठपुवनगरि दिदानीको मानदान
नातरहकासुरतवीनो दकनजान्या मछापेसका उतमस्त्री वडवायसा कुंछ १ नानापुकारकावलुवे

२८॥

विविचवेसायु विकर्मक्षामुलीलिनी दंतनखादिरता मनोजसंग्रामविनोदरुग्धास्यामवा
देशप्रनवापुरवी १ उपनोगकलाचरागीली चिरसंनोगरसपुनोषिणी करद्वाननच
४ मानसावनितामालवदेशसंनवा २ अजिघातक विविच्यते नखेवले परिमेलालासा
नकुंछुवनहार्यमानसावनिता नीरसमदवासा ३

दशपुत्रवधपुराणी १ उपनोक्तकलाचरागणीचिरसमोभरसपुनोविणी करद्वानन
हमानसावनितामालवदेशसंनवा २ अनिघातविर्विस्मयतेनखंयते परिमेलालासा
नकुचंवनहार्यमानसावनितामीरसमुद्गवास्मता ३

जोगग्या वैरैवेरसमकासुतलेप्रसिमान्या हातलेताडनगर्दचावकृतआनंठपाडन्यामालवदे
सकाक्षीकोत्वमोवधसुतरहकोडंठ २ छातिहकमध्यापमावप्रसिमान्या नखलेकोपरिपात
लेयवाईकोचुचनगर्दनिस्समान्या चुवनमात्रगर्दप्रसजकेन्या अंकमालगमनहवाड
न्या आनीरेसकाक्षीयसत्वमोवकाडंठ ३

अंकमालगर्दमावडोलागुधंतलेओठचुवनरपातलेताडनगर्दचाडैवीर्यचहाडन्यासुधलचुमा
रसरिरनयाकासुरतलेआनठहंदागाच्यामैगन्या लापेसकाक्षीयस्ताडंठनननिजोठ
कोमलसरिरकापाखंडादिचैरैडरागन्यासुरतगर्दवडोपिडामाच्यापालमत्कारीमावडंतकसल

॥२॥

परिरंजलोलोत्पारदक्षमधालेईवमेतिसत्वरं लुक्मासलुर्मनोरमासुरतेनन्यतिलालका
मिनि ४ महीदुराचारतावहंतीरताईमुचैरतिनर्मदक्षा तयाविहेनातिमनोरमाच
स्याधंशुकाणीनवाउरंची ५ नितातकंडुतिप्रतस्मालयाईवतिचडचजद्वानना
चिर रतिप्रयोगेचउराओधितमंकिर्तिताकोशतराधुसंनवा: ६

लज्जानमान्यापेपतामावडमप्रसलगा आचोदेसकारकाणीदेसकाक्षीहकएस्तास्वजावकाहं
ठनननिजा ७ ५ महोचिताईनयाकोमगनयाका लिंमलेसाहोहानिसुरतगर्दप्रसिनेचै
वेरमावीर्यपातगन्यानानातरहकासुरतमाकुशलनयाका यस्तास्वजावकाकोशलेसकाक्षीडुठन ८

५

हस्याईवोभुवलाडना अतिरसा अर्क लाईअत्रोलाईवोलनामासिपाल लज्जानमान्या चंचलाव
जावकागोडंन वजाडंन मालागाधु ईकलामासिपाल आपनालेसिमंगवडोप्रितिरासना
नामरहकागहनापोसाकचंनलगाई ६ ८ पानजान्या यस्ताक्षी पाचोदेसकारमहाराकुदेस

इधवासमनोरमाश्चनितोसाक्षेपवागिप्रमानिलीज्जोअपला कलाधुप्रसयागाव

नाम रहका गहना पोसाक चंदन गार्ह ७८ पान जान्या यस्ता स्त्री पा ना देस कार महारा कु देस

इष वासम नोर माधुनितरां साक्षे पवा वित्रे मानि लीज्जा अपला कला कुकुसुमागत
गुरागावेना नार्क पा ७ लि ७ न जा अपिम हारा द्वा द्वा सतत नाना विम विनो न वरा से
का संकीर्तिता पडिते ७ कुकुम न दु मरि रा च वना लिंगा नो धो व द्वा न र वृ त ना वा न र से द्वा
विरा विषम विसिख ७ वे लो के वे गा ७ र श्री न व नित र ले वे गा अंग जा वंग जा च ८

का कुं छ न नि पंडित हृद न छ ७ ७ फल जला कोमल सरीर न पा का चुचन र अंक मा ल ग ना
भाव डोर स मा न्या पां त ले जो कदा न ख ले सा हो को र ना ७ स कुं न्या ७ लै छ ल र ति ग ना को र
नो व न य का चं च ले ने न न पा का य ता स्व नो व का वंग ला का र अंग दे स की स्त्री कुं छ न ८

विपरीत भ्रात वे ई स्था ग न्या ल ज्जा न मा न्या न ख ले जो र व द्वा ७ स कुं न्या ना य का मा र चै प्रा ति
रा प न्या गुर त ग न्या ना व डो ला ७ ७ क ल दे स का य ता स्त्री कुं छ न ज गं ना ध र्मी को दे स उ क ल ले
ते नि षा व च न यो ल न्या को म ल स री र न पा की गुर त ग न्या ना अ धि क वि र्ध पा त म न्या र्मी डो ला मा कु म लं न य की
विहा

विपरितर ता निला विनिगत लज्जा नख दान तोषिनि नितरा न गुरागा सा लि नि म द न्या श्री क थि
ते य ७ ल्वा ली ७ प्रियं व द को म ले ह व द्वा न्ते स द वं ती स र के ली र ने विला स द स्ता
७ ७ ग गुरागा सा का म र प प म वा ७ रं श्री ७० निज योष कि मो प ने ता प्र दोष प्र हा ७ ७ त
म रा व नि ता व न वा स सं न वा द्वा ह प रि की र्ति ता ७ वे ७१ उप मे ग र ता उ लो च ना ल
७ सं नो ग वि चे उ तोषि ता ७ मे चै ष च रा वि च द ना क र्ति ता सा ख ७ ७ र्जी रि ७ वे ७२

रुप भाव डो पी ति रा प न्या का म र दे स का स्त्री य ता स्व नो व का जा ७ ७ आप ना दोष लु का
उ न र प रा ई का दोष पु का स ग र्ज ना न्या च लियो सा हो व द्वा न य का ७ ७ र्जी र ख ड न र फ
की स्त्री ह र र स्ता जा ७ ७ ग ह ना क पु ता प्रे ह न जा न्या अ ने क त र ह का व र पु को मो
गा न्नी मुं ध ने न न य का न य यो र गुर त ले पु स न कुं न्या वी ल न जी न्या य ता स्व मा
व न पा का ७ ७ र रा न का स्त्री ह र र जा ७ ७ २

सा हो वे ग लो गुर त ग न्या व द्वा क र्ज ले वी र्ध पा त ग रा ड न स कि न्या रि सा हा ७ ७ स्व मा व चं च ले ने न य का
का सिं ७ ७ स ७ ७ य न दे स वा ही के दे स का ना य का य ता स्व नो व का ७ ७ छ न नि जा ७ ७ ७ ७ ना ना ता ह
७ ७ को नो ग ना ना व डोर स मा न्या चै र त र ह का गुर त जा न्या फ ल पा का का म ल का प न ज स्ता लं वा अ प
मु न र ने न न य का ना य का भा व डो पी ति रा प न्या सु स ७ ७ रा यो ग रि हि ड न्या जो न स्त्री ला री रा

पल्लवमोगनमावदारसमान्या चेतनहका सुरतजा-या फलप्राका कमलकापत्रजस्तो लंवा जल
मुननेत्रनयाका नायकमावडोपीतिराचन्या सुस्तपुता राधोगरि हिडन्या जौन स्त्रीलाइदे

३०॥

प्रचंडवेगा आगे कष्टसा व्या सुकोपवत्प श्रुतनेत्रपाता भवति दुष्टा किल सिंघु जाता जव
लेवाही कनेकाश्चनार्थ १३ नानोपमोगरसिंकारनिरंगव्या प्रोत्पद्यपदनायना प्रियवधरा
गकंपर्पदप्यपि सिद्धिपनमावसिला जेया सुचैर्मदुगति खल्लैरुत्की १४ गौर्य मुनेत्रवधनरम
निवाच कांता उरागरसिका नैस कोमलाया कपयकेलि कुलला कठिता कवि ईनेपालजा कठिनाये
नकुचारमाल्य १५

पानिमात्रे प्रसवहेरुका मधवले मोहिन ऊंछर ते होत काखीयसा तरहका ऊंछर १४ गौरवर्न सु
मनेत्र मुख जया कारा प्रोवोली आ फुमा प्ररूपको प्रीतिवडा उनजान्या अल्पतकपुलो अंगनरा
का सुरतका अनेक कलाभा फुसल साहासा हा पुष्टतन ऊंन्यायला तरहका नेपाके सकासी ऊंछर १५

सुरतका अनेक प्रकारि कयाका लज्जा मान्या वल्लुको जोगगनजान्या साहावेगले सुरत
गन्या देवतामा प्रसिलाया यस्ता स्वभावका पुषापुरते लंगोरे समद्वेसका सी हरजाकु मदेसमना नका
ताफ १६ कोमलसरिरनयाका मसुरवचनवोलन्या थोर सुरतले वीरपात न्या वडो आ जयाका लज्जा उरत

॥ ३० ॥

संजोगसिद्धा कसला मलज्जा प्रियोपमोगा अतिचंडवेगा मनोरमा पुषापुरे प्रमुता अरंगनामंडल
लंगजाश्च १६ मदा मुवाचो लज्जा साया संसा हसावीत मयत्रपाश्च समानतया दवे दे प्रजाता
सोविरने दे मलये चनार्थ १७ नखादि विन्यासकला विहिना संजोगसंमर्दनं जात तोषा स्वभाव
मोडुष्टतमा प्रचंडा कांवी जीपो दुपुष्पावाश्च १८

याकाई विडदेस सोविरदेस मलार्थ देसका सी हरयस्ता स्वभावजोका नु सोविरदेस पजावतरफ म
यन्याको मद्दारे देस हो १७ नखक्षत उंचन अंकमाल हावभावका पक्षहर कोहिन जान्या सुर
लेमात्रे वक्रत प्रसङ्ग्या वडोडुष्ट स्वभाव नयाका रिमाहा यलो स्वभावका कांवी जयेस कार प्रोडो
सका सी जानु कांवी जयेस नोका तरफ छुप्रो डुकरे सको काला कातरफ १८

हाड्या सरिरनयाका थोर सुरतले लज्जा ऊंचन अंकमाल हावभावका पक्षकोहिन जान्या पर्वत
का मुह्येसका संचार देसका कक्षीरे देसका सी हरयस्ता स्वभावका ऊंछर १९ पक्षिनी मगी प्रच्छातो

॥ हा उभा मरि नपावन थोरै सुरमसे संजुहुं न्या सुवन अंकमाला हावभाव काक्षकोहि न जाना पर्वत
 का भुईये सका संचार ये सका कक्षीरे सका स्त्री हृदय लास्य नोव काहुं ११ पक्षिनी मणी प्रभुताते
 नि देव गंधर्व हर जलो स्वभाव कफादि प्रकृति तदे सका स्त्री को स्वभाव जानि नाना तरहे वा सुरत भासि

॥ ३१ ॥ दुर्ग वगा जाल धु मो मनुष्य सं सुवन नाले पण भावहि ना नो छंगा ना पर्वत जा अनाये गांचा
 का स्त्री रन वास्तव्ये ११ जात्या पि नानि तित्त सय वय लु जात्वार सका ल काम का प्रवीणा सतो
 पय चमत ते सुरत प्रयोगी प्राणो समव प्रपय निसका मिनीनां २० इत्यनंगारो सने वन रूपनं नाम पंचम स्थल ५

या लजे जली लाई जालो सुरत चाहि न्या हो रलो सुरत गनी प्रप स्त्री हृदय प्रा न नंद पि पारो हुं २०
 यो अनंगारो नामा प्रथमाना ना दे सका स्त्री हृद को वहु वा हु न्या स्वभाव कहिया को पंचम स्थल समा पुन यो ५

पुरुष को नय पहिले स्त्री को वीर्य पातन नपा सुखे हुं देन न सकारा सुरत का अंग ककला जाना मंजुष्ये ज
 सना हरे स्त्री को वीर्य पात पहिले हृदय सुतलो यत्न गर्भ १ पक्षिनी मणि प्रभुति जाति देव गंधर्व दिसा स्व कफा
 प्रकृति रके स्त्री माडु इती न जाति को लक्षण जां उं नाले इ न लाई कुप्राई सकु को नहुं यसे कारा अति

॥ ३१ ॥ प्रणि प्रस सुरते नपावन थोरै डेवें ॥ सुखं नता वत अतो सुखे काम कला प्रवीणो कार्य प्रयत्नो वनिता डव
 त्व १ जात्या दिसा मंडे रस का कया विविसे पत्र अतएवा तसो दमा सक पि दे गो चरा २ तत्मा
 हरो कहितार्था यदपन्यो सुख से द्वये नानो पवि विधाने नई व उ न्ने र दीयेते ३ मनु ना सहि म
 यो पञ्च एयि मावांग के निक्षि पते नतांगी ता पुंस प्राडवतां प्रजेत ४

सुख म क नाले चंद्र को लापनी जानी स की देन २ सर्वे लोक का हेत निमित्त स्त्री पुरुष का सुख निमित्त अ
 ने कांतर हका औष चले बाडे स्त्री को विर्य सुहुं न्या मुक्ति कहिं ३ सुखे मरि च पी पला को सुलो म
 ह संगारि स्त्री का मंगली हासि दि गुर सुरत मा पुरुष नपाव हेत वीर्य पात गर्भ ४ छ

सोवनगंगाकापारो-जईकापातकोरसचोचर-मर्दनगरी-पहिले आपनाचगमाहाली जोखी सुरतगई
 सोखी प्रहस नंदापहिले धीरपातगई पू पाव्याका अमिले कोपात-सिं उर-वरोवर भागगरी महस
 गमिसि चगमाहाली जोखी सुरतगत-प्रहस नंदापहिले तनकावी र्यपात हवस ई कपूरावामा

अवसंकरवीजचजातीरसविमर्दितां वरांगमवेनिक्षिप्यनारिसडावयेडने पुनिचांफलांर
मिंदुरमाक्षिवेनसुमचित निक्षिप्यतेनतांगीसापुंस प्राग्वद्वहानयेत् ६ कपूरवंपकां
संजुधीजंसेतित्रिमिसमे सशोडलिंप्रतिंगलुनर सडावयेत्स्त्रीयम् ७ मखाजाग
त्पापत्रोत्परससंमर्दिनेनच एकौनध्वजंलिप्ताडावयेयवलांनर : ८

श्री वृणगिरि महसंग वरी वागीरि निहाइ लिम ~~म~~ माले पगरी जो खीं ७ तप छलगतन नि आप्रमं
 दाप हिले स्त्री को विर्य पातम तांडन ७ मह धिउ अगस्ति का पात कोर स स्वाग २ नि वीर गरि
 लिम ले पनगरी जो ७ तप संनौ गग दन सो स्त्री को विर्य उहावन सक छन ८

परां नृपदे अमिलिका फलः स्त्री मी च विपत्ता प्रलो एति वीर वरगी महसंगमिसि लिंगमालेपनम
 नि जो प्रतप प्रतगद्धन सो प्रतम आक्रमेण पहिले स्त्री को वीर्य पात मरो उद्धन ह मसिच वग
 राजा विद्या विपत्ता लोच एति को युग वीर वरगी महसंगमिसि आपना लिंगमालेपनम नि जो प्रत
 जि गो मरु शिं ११

जिह्वा ७८ अंशं चिह्निका फलं च बीपा राजा द्युतं समांस एभिर्ध्वजं पपीलि प्यसेते
 र्यात्सोरेन छदिमंगनां रु मीचकन कविजै पिषाणी लो घुत्तै विमलामु विमि
 नीनवोलि पुलिंग- स्मरमर विली मेकाठमा च्या रानारी मपगत रति रांगां सविध वाधवसं
 १० अधस्तं नन विवि- पतना न्मयनां नसत्त्व रा परिती चो रा र्थो वै कुर्यं कं वं दिना सिनां मु
 र्ना सवसि दि हेतवैत द्यंस्तं न विवि निर्ह प्यते ११

पञ्चमस्तोत्रं निष्कृत्य कर्मलेखी र्थपातगाई नमस्कांक्षी कोपनी अवस्यती र्थपातगाई नमस्का
तद्धन् १० अथ प्रथमको वीर्यसमं क्रुन्वा उपाय कहिं ६ प्रथमको वीर्यपातगाई नमस्का
स्त्री हस्तसंगुष्ठकृद्धे नव्यतमकारणात्ताड्ये प्रथमको वीर्यनज्जन्वा विधि कहिं ६ ११

पुरुषकोवीर्षिपातकं न १८ सपेक्षालम्बमानाकोवीर्षा वरकाहुचमाहालिपिचि-कवी-
क्षकावीपात्रेन राषि आप्ताभुसामेवहलिजोपुरुषपुरतार्द्ध तसकोवीर्षस्तनहुह १९

अथवाजीकराणां नामा पुरुषको वलवीर्षवडा उन्माजोपचयकहिह १८ पकासाम
र्थनन्याईकाहेयाकावीर्षस्तं मेवीर्षपाताधिकीयासववार्थहुह न तसकाराणां पुरुषकोवी
र्थ सुरतामासामर्थवडा उन्मा उपायकहिह २० विदारीकंदकोउर्ण तसकारसमा

अथवाजिकराणां सक्तेरभावात्तमादिसर्वमेवाप्रयोजकं अतः सारि पुरुषार्थ
वाजिकराणामुच्यते २० उर्णविदारी पुरसे नीवितं नाउसोलेतं मन्वाज
॥ ३७ ॥ मिश्रितं निजतेवनितादस २१ त्वरसे नीवितं वा निजुर्ण
माज्यासितां चितं कोदणविलिहं रात्रौ न जतेवनितादस २२

निजाईद्याममाभुकायाकोधी उमहसंगमिसिसवेषा उ नसमनुष्य
कादसोपिस्त्रिसंगपनीनोगनकोसामर्थहुह २१ अंवलकोउर्ण
तसकारसमानेजाई धी उचीनिमहसंगमिसिरातमाजोपुरुषसव
जोजनगई त्वाधसोपिस्त्रिसंगपनीपुरतगर्नसकह २२

त्वा उक्षकावीयाकोउर्दि गोत्रु रकंदकारि वलु नागवला सौप रतिकोउर्ण
सर्वे नहसंगपात्र पुरुषकोवलवीर्षवहुह २३ चिनीहाली मायाकागाई
काहुचमा मासकाक्षारानेजाई दाममाभुकाई तस्कावीर्षाकोवारागाईकाधी
पमायकाई सर्वे रातमाजोपुरुषपान्द सौपुरुषहुहोचयापनिनहपात्र

कपिलोक्षुरगोरक्षवला नागवला मव उर्ण तसमपत्राया पीतकोदे
॥ ३४ ॥ लमेष्टिकं २३ सितासाचिनगोक्षिरेमापानसंजावसोपयत् मात्र
पादे पुनसेषा उर्णित्वा ... २४ कावी धनेनसोच्यप्र
रोकेने वको गरा त दोपिपवली उर्वा वान तागततपुगेन २५ नी

॥ ३४ ॥

कपिलोद्भुरगोदयवला नागवला भव- उग्रीचमतपत्राया पीतक्षौद्र
लप्योष्टिकं २३ सितासावित्रगोक्षिरे माषानां जाव्यसोपय- मा-
पाटे पुनसेषां उग्रीसावकं ७ मन् २४ हात्वा धनेनलं सोपय
योषे नवये सदा हृदोपि प्रवली उवा वनितानां मतं पुजैर २५ वी
जसितपिकाव्यास्युतं दुल्ल- पष्टिको दुवाः द्वौ कर्षलिहन् गजो मधुना ह
उता पुजैर २६

वावलीयो जे मयस्त्री संगपनि जोगिर्नमकछन् २४ २५ सपेदनाल
मषानां कावीया साठी चानका चावत् एवतोला जो पुतष- मह संगमिसी सवे
रातमाषा-रू- सोवतवा-र हवस २६

मपत्राको रसगाई को घि उतरो वर मा गगी- पलवेस दुचमाने ज- २६
को उदे गन्- मह सिनिसंगमिसि जो अनग- पुतषको रल वीर्यवछ २७
को लोहा- हरी- वर अवला जे भुको उग्री घि उ मह संगमिसि सा रूपनी वेला-
जा सवेसा नुछ- सो पुतष भुतगा- अवल्यस्त्री कनय का उन मकर २८

॥ ३५ ॥

मपत्रासंमर्षि लल्यं सध सचापय पत्मासंसावित्रक्षौद्र सिता म्यापो
ष्टिकं पर २७ मतापली फलपष्टि उग्री म उ धन न्वितम- दिना
मेलोठियो निनिसंनारी च सुरते जपैर तयेवक्षो स्थली का म उत-
२९

अवपुतषको लिंगुलो ऊन्या उपाय कहिं छ होमापतला लिंगले सुरतगर्द
खीह र संजु छ ऊं दे नन्- तत्काराले स्त्रीकासलो मनि मित्र स्थूलि कलना
मा किया कहिं छ ३०

वज्र- नागवला- ऊपूवो- म जपि पाली- अश्वग- वा- करवीर- एति वसु को मा
गवो वर मी गाई को नी संगमिसि लिंग माले पनग- पुतषको लिंगो डाकाव

वज्र-नागवत्ता-कुटुंबो-म-अपिपाली-अश्वग-वा-कारवीर-एतिवस्तुकोमा
ग-वो-व-मी-ग-ई-का-नी-संग-मि-सि-लि-म-मा-ले-प-न-ग-उ-पु-र-प-को-लि-म-घो-डा-का-म-
रो-व-र-उ-छ-३०-३१-जा-ई-का-पा-त-को-र-स-लि-ला-जि-त-का-उ-छो-म-रि-व-पि-प-
ला-स्वा-ग-ए-ति-वी-र-वा-गा-ग-रि-उ-र-ग-रि-ति-ल-का-ते-ल-मि-सि-लि-म-मा-ले-प-ग-उ-

॥३५॥ वला-नागवत्ता-कुटुंब-वा-दि-र-द-पि-प-ली-वा-जि-ग-वा-ह-य-रि-उ-रि-ति-स-र्व-म-मा-सं-क-म-
३०-३१-जा-मि-र-स-सि-ला-कु-टु-बो-पा-कं-का-ण-उ-र-ग-को-ति-ल-को-ल-उ-र-ग-को-ल-
म-ह-दि-प्र-जा-य-ते-३२-से-च-वं-म-रि-नं-कु-टु-ह-ह-ती-ख-र-मं-ज-री-ह-य-गं-वा-य-वा-
मा-पा-पि-प-ली-गो-र-स-र्ष-पा-३३-ति-ल-श्वै-ता-नि-सं-पि-पा-म-उ-नो-द-त-न-उ-च-
X प-यो-ज-ये-क-र्ण-पा-लि-त-न-लि-म-वि-व-ई-न-३४-३५

लि-ग-व-ढो-र-३२-सी-चो-उ-च-म-रि-नं-कु-टु-का-कारि-अ-पा-मा-ग-अ-श्व-गं-
वा-ज-उ-मा-स-पि-प-ला-से-तो-स-मि-उ-ति-ल-ए-ति-वी-र-वा-गा-ग-रि-पि-वि-म-ह-सं-ग-मि-सी-
कां-न-का-लो-ती-ना-उ-का-स-न-मा-उ-र-प-का-लि-ग-मा-स-वे-ले-प-न-ग-उ-र-का-न-का-लो-ति-द्वी-
का-स-न-पु-र-प-का-लि-ग-व-ढो-र-३३-३४

प-ह-ले-ने-सी-को-गो-वर-लि-ग-मा-ध-सि-ने-ला-यो-वी-या-उ-च-म-ल-को-पा-त-ए-ति-व-स्तु-को-
ने-स-म-का-कारि-को-फ-ल-को-र-स-मा-पि-वि-लि-ग-मा-ले-प-न-ग-उ-र-ह-न-या-पु-र-प-को-लि-ग-उ-र-प-नि-उ-छ-
त-न-स-ग-मा-मु-सा-ज-सो-ह-लो-प-नि-उ-छ-३५-३६-लो-च-हि-रा-क-सी-त-ना-म-व-ला-ए-ति-को-उ-
र-हो-लि-प-का-या-का-लि-त-का-ते-ल-को-ले-प-ग-उ-र-का-न-प-नि-व-ढ-सा-उ-यो-नि-ने-वा-का-ली-को-यो-नि-

॥३६॥ म-ह-जा-नं-ह-उ-ल-वा-गं-न-लि-नी-य-ल-मे-व-व-य-वा-न-द-स-म-ह-ति-फ-ल-जे-नां-ने-सा-स-ह-
३५-म-हि-को-गो-म-ये-पु-र्व-द-व-लि-गो-वि-ले-प-ये-र-त-न-स-गो-मु-स-ला-का-रं-द-उ-नै-व-म-वे-व-
ल-म-३६-लो-च-का-सि-म-मा-तं-ग-व-ला-का-ले-लि-लो-उ-वे-ने-ल-सं-सा-वि-त-लि-गो-प-नि-का-
वि-व-र-न-म-३७-अ-थ-यो-नि-सं-को-च-वि-वा-न-म-प्रो-ठ-न-व-पु-स-त-ना-नं-स-थं-मु-ह-न-रो-च-ते-पु-ना-म-
म-ल-सं-को-च-वि-वि-म-ये-प-तो-उ-वे-३८

र-पु-र-प-को-लि-ग-प-नि-व-ढ-३९-अ-व-म-ग-सं-गु-र-हं-या-जो-ष-व-उ-पा-य-क-हि-ह-सि-व-प-ये-
वि-उं-मो-प-न-प-न-व-प-म-को-उ-र-ना-मा-म-पा-ली-खी-को-र-ए-का-उ-ई-मे-हि-ना-म-या-की-सु-त-का-रि-
वि-का-म-प्र-कु-लो-उ-न-ले-सु-र-ग-द-मा-उ-वा-न-पु-र-प-ली-इ-र-वि-उ-न-त-स-अ-र्थ-म-ग-सं-गु-या-उ-
न-या-जो-ष-व-सं-क्षे-प-ले-क-हि-४०-४१

स्त्रिको मगपुकुलकुनलसुरतगदिमा जुवानपुतपलाई तचिहुँन नम अर्थ नगसंगुयाउ
न्या औषध संक्षेपले कहिछ ३४

डो ६ समेत को फुल गाईका डुवमापि विगो ली वों वन त्यो गोली यो नि नित्र डुई चार धाडि र
पुन एर अन्धा सले पुकुलो नग नया की हृदो द्वापनी वाला ह्री काज सो सांगुरो नग
हुन्या हुँछे ३४ देवा वचु जो हलपि कमल को केसर एनि मसिगुगरी पानि मापि च
न पौलि पनग मास वेलै पगन लि कसै पुकुलो नग पनिसा गुरो हुँछे ४० ताल मधाना

सनालं कमलं पिबु पयसा कारयद्विना नानि वापसा यो नो हृदय पित्वा नुमा
॥ ३६ ॥ रिका ३४ देव पाक निसा गुमं सरसी रकुं केसरे सौलि प्रमदन क्षेत्रं रंजोत्तं परमं वृज
४० लिप्तापिका स्वावी जे श्रवारि पिबे सारा लय न् नियमेन परंगा ठंवा गंत नने
X ना ४१ त्रिफला चातकी पुष्य जम्बू त्वग्नी धरे समम् सखो दे लि प्रु स्वाचक न्येव
स्त्रि नेवेत् ४२

कावीया जलमापि विगो निमाले पगुर् वडैतै सांगुरो यो निहुँ ४१ हरी वरी अ
वाला चजारी को फुल जागुना कावी का लो च एति वीर वर मागगरी उगी मी मह संग
मिसि यो निमाले पगुर् पुकुलो नग नया की हृदो द्वापनी का पाकाज सो सांगुरो नग हुँछे
३४

निमालिं डाका विधा लोच समेत जलमापि विगो निमाले पगुर् नया हृदय पित्वा नुमा
X ह्री काज सो सांगुरो नग हुँछे ४३ अश्वगंधा वल्क मरिच पिप्पला अहो हस्ति धो
नील कमल कुठ वरो वर मागगरी जलमापि विगो निमाले पगुर् वडैतै सांगुरो यो निहुँ ४४

कुटुंजी नजे जी सलो चै सारम निरुग लिप्ता नव प्रमुता पि उव कन्ये वजायते ४५
॥ ३७ ॥ वाजिगं वापसा नो पनीले श्री वर अहो लोच पिबे सारा गार लि प्रंगा ठंवा नवेत् ४६ म
उका वसारे गह्वरो नम गुना सह वरांगं पुरितं यत्ना दयं तं दृढं प्रजेत् ४७ अथ यो

॥३७॥ वाजिगंधावलाभाषनीलेदीपजडको. तोयविष्टः स्मरगारलि प्रमा उत्तरं मेवेत् न न म
 उकाक्षसरेगंधासो नम उनासह. वरांगं पुरितं यत्नादयो लंदह सां प्रजेत् न पु अथयो
 निमांकाः लवंगसार्धपतेलां जाती पुष्यः प्रसाधयेत् नारी प्रथं तद्व्यंगान्मुगं विष्टुते मेवेत् न न

मं ऊवाकाक्षको मित्रको उरो. अर्धगीमहमाभिलाई योनिमाते पनगर्भ. अत्यंतमां उरोपो निजं ह न पु
 अवयोनिमा दुर्गमिन्नकुन्ना गुणं विवक्तुं न कुन्ना ओषध कहिं ह. जाईको अल लवंग मिलाई मसिउं
 कोतेल माधका उउ. तोतेल लीका नम माते पनगर्भ. सुरतगदीमा योनिदेवी वडो सुवास हं ह न

देवार. कास्तातिल निमर सां जका चतुर काविया. समजाभागी तिलकाते लमा पाक मर्. तोतेल
 योनिमाते पनगर्भले. योनिमा वडो सुवास हं ह न अवयोनि को रोम कन्या उरोष च उपाय कहिं ह
 तोरिकाते लमाना म उगी मिलाई. सात दिन ल म उर्य का पाक मर्. तोतेल म दल गनीले योनि को रोम न हं ह न
 संखका पुं उरा को नम्यगी. हरिताल को उर्ध मिलाई. केराका सुपूला को पा निहाली धाम मा सुका उउ.

॥३८॥ सुरदाह तिलारी वडडि मां जनकां चने नैलं सं सिद्ध मं न्यं गाद्यो नि सुरजितां नयेत् न न
 अवलोम सात नम क पुतेले नाग चूर्ण कि द्वास प्राह मा तये नि चयं मर्दना न कुयोनि लोमा
 महं मत न न स प्राहं जा विनं संख नम रं जो न सात. ताल पुतां न हरति योनी लोमा
 नि यो धिता न न हरितालं पलास म नम रं जो न जलानित म यत स्यात् पादो मा नि नो ह स्ती क पच
 न पु०

यो आधिन माधनि केराका सुपूला को पा निहाली धाम मा सुका उउ. तोतेल सात दिन ममगी सिध न या प
 हि. योनिमाते पनगर्भ. रोम न हं ह न हरिताल पलास को नम. केरा को पा नी मिला
 इ. योनिमाते पनगर्भले. योनि को रोम न हं ह न पनी उर्ध येन च पु०

अथ रज कुं न हं आका लासाई. रज कुं न्या ओषधि उपाय कहिं ह. माते का उना का मोत उर्ध. तोतेल वा
 हं माया को फुला समेत जल मा पि वि पि नु र. लीलाई रज कुं ह पु० लहु आ का जरा दे वः र दु जो का
 पाल धरोवर. नमगी पा नि मा पि वत नो पि ना ले ली लाई रज कुं ह पु० आवहे रज कुं न्या ली लाई र

पंचतत्त्वमम् यही चूरीसिताया पुस्तक विनि श्रयेत् ६९

दिनसम्प्राप्त दुर्धनान्नोजनगर्ह रहता निचाएक पुर विनिशकी जरी गाईका दुधमापका
दुकी गाईका घृतमाभिलाई रजमपाका चतुर्थदिनदे प्रतिन दिनसम्प्राप्त पुरधकासाले लीलाई गर्भचार
॥ ६६ ॥ निधनसम्प्राप्त विनि कनकेलेलाको सेतावतुका जगको प्रीति लक्षक जेठि मधुको चुरी तोल यव
विनि तोलाचार ६९

यतिथोकभिलाई पिं चउ वांछो जिउ दो नयाकी एकवर्ग गाईका दुधमाभिलाई रजमपाका चतुर्थदिनमा
दिनजरनोकोही सायं कालमा पाउ ६२ राजिमा आक्रापति कोसमाग्न जोलिपल विहान दुधमा
मपाउर लीलाई गर्भ चार ६३ अवगर्भ पातन कुन्या जोष वं उपाय कहिंछ कुन्याको मां

॥ ६४ ॥ पि कुमारे कवर्णया सव न्याम श्रुतेयव आय यति प्राप्त न्ये विवेकायं वरांगना ६२ नवा
यतदिने किंचिदुपरात्रोपति नवेर पात शिरोपन नये दुर्निनीत्यासंयम ६३ अधगर्भ सं
ननम कुलासपानिसंलग्न पंक छोड समन्वित अजा शिरोर मुखितो गर्भ लने कोसालम ६
यही सावर सत्री पां चुरी पिष्ट पोचितमः सप्राहा वृत्तितं गर्भ लीलां सलं नये सुवम ६५

यादो माह सत्मासाया कोटि लो महु वाजीको दुधमिलाई पिनु चले सायाको गर्भयामि ६६ जेठि
महु लो व अवला यतिथोकभिलाई चुरी गरी गाईका दुधमाभिलाई सात दिनसम्प्राप्त पिनु चलेन सायाका
गर्भयामि ६७

कुलेमान चुरी गरी गाईको दुध घिउ महुमाभिलाई पकाउ सीतल नयापिठु सागु वैहाउ
नयाको गर्भयामि ६८ गर्भतमिको वांति अल सोठ वातपिठकफका विंका ले नयाका वै
नाम नन पाउं छ ६९ अवगर्भले प्रभुति कुन्या जोष वं उपाय कहिंछ विनि

॥ ७० ॥ कदलो हितपदसखी सज्जम सुसुतम सुपका सीतलं कृत्वा सप्राहं प्राज्ञ नापिवत् ६६ गर्भनावं
तथा वाति अलं सोधने पोषजम अन्या अवहु सोरोमाना सपेना वं सय ६७ मापुलिंगम पुका
सं चुरी मधुघृतान्वितम पिवा मुते मुवेनारी सी घुमेवन ससय ६८ ॥ ७० ॥ ह संसमा वायपिवे
पुष्टिनाम्भसा पासासत मुवेने वसी घुमेव वरांगना ६९ रविवारि गृहितसागुं जा भुलसाय
वतान नीलसुत्रे कौशुत्रि जायते प्रसवस्वरा ७० ॥

रकी जरी महुवाको जरी इहुईको चुरी महुगाईको घिउमिलाई पिनु चां डे ली प्रसवहुं ६८ उ
वा सो वासि नाति संम भिलाई पिनु लीलाई सुपले चां डे प्रसवहुं ६९ आदित्यवारका दिन उ
ले लिवाको सतिगेडो जरी भिलाया मावां विवारी मार मिरमावां चउ चां डे लीलाई प्रसवहुं ७०

पासावापि नाति संभ मितोई पिनु र स्त्रीलोई सुपले चां डै प्रसवहुं ६१ आधित्यवारकापिनु ६२
लि. लिधाको रतिगेडिको जरो निजावापि मावा विवादि मार सिरमावां वन चां डै स्त्रीलोई प्रसवहुं ६०

ॐ मन्मथमथमथवां हिलिवाल सोधं मुंच मुंच लघु स्वाहा यत्तमंत्रले जलमंत्रिकन पिनु र सुपले चां डै स्त्री
X प्रसवहुं ६१ अथ वस्त्रि लेवा पिनु र हेवागर्भ चारण हुं न्या ओषध उपाय कहिं छन निन्वर्षको पुरा
७६ चार चार तोला पंच दिन सम पातुर जिउ न्या लमन चारण हुं न्या ७७ चानको नस चिताको जरो

नत्र जावनमत्र ॐ मन्मथमथमथवां हिलिवाल सोधं मुंच मुंच लघु स्वाहा इति मंत्रेण संजप पातुं
६२ यत्तमंत्रले जलमंत्रिकन पिनु र सुपले चां डै स्त्री प्रसवहुं ६१ अथ वस्त्रि लेवा पिनु र हेवागर्भ चारण हुं न्या ओषध उपाय कहिं छन निन्वर्षको पुरा
यांति पलमान्त्रु नितरा मासाई लामे वद न्या यावदा पुन संसय ७२ उपतो येन संकायाय
७३ कंदवत्य फलं पादं मंशिका
यादिन च ७४ वित्तु धोपको मेव वन्वात्य प्रति पायेय ७५

मागगार काथगर्भ रजमेयाका चोथारि नमापिनु र गर्भ चारण हुं न्या ७३ कंदवकी फल
७४ पातलाता पानि माभिलाई रजमेयाका चतुर्थ दिन विनि नृदिन सम पिनु र गर्भ चारण हुं न्या ७४

सप्त सप्तवीथामोला डई चुली मारि चोला निभिलाई रजमेयाका चोथारि नमापिनु र देवी सात दिन सम पिनु र स्त्रीलाइ गर्भ
चारण हुं न्या ७५ अवकोस चोरे लामा हुं न्या वदि चारण हुं न्या ओषध उपाय कहिं छन निन्वर्षको पुरा
वरोवर मागगारि गाईका डधमापिं चोकेस माते पगर्भ केस चोरे पानि लामा पनि हुं छन ७६ वज्रव

७७ शोभरु हवी जानां पला चित लहुं ला जमसा अतो पीतानु स प्राहं वं च्यां कुर्यान्मगी हसम् ७८ अ
थ केस रजन विचि गव्ये तपयसा पिष्टु तिल पुष्यं समो गुरम् स प्राहं लेपनात्कुर्याद्वेसा न्नीधीन्
व हुनपि ७९ दंतिसावर कल्ले नं सिद्धं ते लं तिलो द्वय पीतं कास्य च पर्वत्वं दंतानां हस्ते लेपनात् ८०
८१ जाफल जाशो डुतु कोले पानि ह न्या लम इन्द्राह प्रंतथा केसरा ज्योरो हरा बा रागम् ८२

मिलो व. वरोवर मागगारि तिल काते लं माभिलाई पकाउनु त्यो ते ल. दांत माते पनगर्भ दांत को पहे लो रंग जां ह
८३ लामा मया हुला हुं छ. छोला मया लामा हुं छ ८४ रतिगेडिको चुली महमाभिलाई लेपगर्भ र. चोई
८५ तिलायाको निको के छ ८६ उन्वर के सपनि ड मुं छ न ८७

८८ लोकोनात पोली चुली मर्भ लो चुली पानि माभिलाई लो लमगर्भ पाड रोनि को के छ चोरे के सपनि ड मुं
८९ आंव को फल हरी वरी अवला अर्जुन हुं दा का को जा पिनु र रतिगेडिको चुली मागगारि मिहि मारि वि
९० नि. नि. ल. म. ले. ल. माभिलाई पकाउनु र सिं च मया को ते लं निल ले ल कहिं छ ९० त्यो ते ल को स माते पगर्भ

६७ सिमलकाकाका रूपागरी माईका दु चमाभिलाई लेपगनीले डंडिफोरनिकाहुं छन ६८ लो
वसिचनः सर्मिउं लोभोवोवर मागमरिपानी माभिलाई नी नदिन समलपनि डंडीफोरहोउ छन ६९

अवनायापनाकानीको डुवाइकायकाहें कातामिल जीरा रुखजीरा सर्मिउं एतिवतेवर मागमरी उली
गरी माईका दु चमाभिलाई तातदिन समलपनाकानीले बां बांजाहुं चन्द्रविंजसो उज्जालो मु प्रहं ७०
गलपना जो ७१ नउ लुं धा उत्रो हलेयो एतिवतेवर मागमरी केराकापानि माभिलाई पिचिसातदिन

११८३॥ अथ भुवहायाहरणं तिलदिजिरासीकाथनिचुद्धाक्षीरेण लेपयेत् यः स प्राहं जयेनीलोचनं
वदधनं नेवेत् ७२ गोरिकं सोणयष्टी च मेघनाथन साहं यं पिष्ट्वा रं मंजसा लेपात् स प्राहानिलिका
अयेत् ७३ अथ कुचसंस्कारः वाजो वावला कुक्षकाणां उद्वीगकं नवनीतां दुसंभिष्टं लेपात् कुचोत्तुकां प
थन ७४

संभलेपगनीले बायाजां छन चन्द्रविंजसो मुविहें ७५ अवसनव डंडियाउपायक दिं छ अथ
ग वा वलकुपोपला परवीकाजा लवण एतिवतेवर मागमरी रूपागरी माईकोन डनीर पानी मिलाई समल
लेपगनीर सनव ७६ छन ७७

वनेलकोवोसो नैं सीकोवोसो सर्पकोवोसो वरोवर मागमरी साईसनमर्दन गत्रीका सनव ७८ छन ७९
काफलाकावो काकोकाथ मिलाई तिलकोनेल पकाउनु लोतेल मर्दनगनीले दूतीका सनव उचापनिवडापनिहें
८० दडिमकोवो काकोकाथ लोसासर्प इकातेल पापकाई लेपगनीले सीका सनव अपनिमुनरपनीहें छन

लोसमउजं नउनु उजं नउनु वर माई नां लूणीयां कुचा संवांतिपिनतां ८१ श्रीपण्डित
लोह सं तिलतेल निचलेपयेत् यः तिलापयेत् ८२ नुमो कुचोत्तीया ८३ दडिनीकासं
य डकादुतेल विमर्दयेत् लोवावलोपीलो नय कुचोत्तीया ८४ नैलंतेलो ड्रवंगवां धतंवा
कीपाय समल वलापामलता वापल उल्लभ निपाक ८५ वे हें ८६ एतेकांकासहितं पचेन्म दुनिनामुवि
मभयेन कुचा रूपागनीसीधुं विलास ८७

८८ वल मादिवा मरिच उडो पिपला लज्जाल उत्रो हलेयो एतिवतेवर मागमरी काय मन्त्र नसका यमा
तिलकोनेल माईवेधत वात्रीको दु च वरोवर मागमरी पकाउनु एतेलकोनिल नमूलीनाले सीका सनव ८९ व ९०
९१ ९२

महाभूमिकारात्रिमासपुष्पाकारपरमायायाको. कज्ज
हं हं मोरोचनकेसर. छिंदकुमार. सिलाजित् एतिवरोवर
मंजु. शौंवालेजो जोयेधिं हं सोमो मोहितहं १० पुनपा

अथांजनविधि महाभूमिदिनेषु सुखानोत्तरमस्तके पातिसंज्ञां विष्णुमोहयेनप
नांजनात् ए सोचनाकेसरं कपासिताचेनिर्विलोचने योग्येदृष्टिपथगंसर्वैवविमोहयेत्
१० तीलीमकुटतमारेलेत्यासोमासुपर्णिकां सिधार्यतेलेति क्षिप्यकज्जालं नमस्तके ११ पाये
येजनात्तस्य सर्वयुवनत्रयं दृष्टिगोचरमायाति सर्वो नवनिधामवत् १२

नि. कृत. तमः एतिवरोवर जागगीपाकावस्त्रमालेपगन्तु. तस्य वस्तु को वातिसर्पि उं काने ललेति जाई म
पाकावस्त्रपरमा कज्जालपात्र ११ तीलकजल ओं पाभाताई जस लाई ओं पालेयेधिं हं सोमो मोहितहं १२
जो १२

आदित्यवारतिथ्यनक्षत्रपञ्चमासिलाजित् कमलकोकेसर. दहिडलो गोहोचन एतिवरोवर जागगी
रापीसि उं रत्नामासो प्रपले. अंजनगन्तु. स्त्रीले अंजनगन्ता प्रपवसगद्. प्रपले अंजनगन्ता स्त्री
१३ सेतीका कजंधाकोजो. मेंवराका. पा. प. क. कमलतगलकोजो. एतिवरोवर
जागगी. तो जुर्गजसका कपा. तमाहं दिपो सो मोहितहं १४ नवरी पद्मिमाउठ आको
सोलाकिं जलकपातिनिरोचनां तपांजन. पुष्पाक योगे विहंतं पत्तो मेहनं पर १३ अथ
उर्ध्वविधौ काकजंधासितां पक्षो जामोकोकृष्णपलं मूलतमोजसेपां उर्ध्वसिप्रविमोहयेत्पु
१५ सोमलमासमासवस्य च पक्षात्ते हिं प्रणिहि प्रसिरसिमोहन १५ सप्रहृष्टसिवा
नसमासकं अमिषं सि सि सि प्र उर्ध्वमो हकार पर १६

मूलतमोदीकासरिमासमासको जलकोमाला. मेंवराका दुवे पांरें. एतीवरोवर
माहमाह दिपो सो मोहितहं १५ हनिवनकाजरा. सदास. नेआंके हं. एति
जागीरगाहिरिद्वार. सोमो मोहितहं १६ सने. हं १६

जाईकनमोह कुचावधि कहिं हं मंजुवाकाधिनवां होचरि
नकन. आप्रावीयेलेने. तोहादि मासपि अकाहं डिनेहाकज
कुचावधिमासातदिनसम्यरापच. पद्धि तो निकासिपिचिकनगो. सिवांच
हं १६ पुष्पलाई पुवाया प्रपमोह हवस्य प्रिमिनया दुवेसी प्रपलाई पुवाया
नवे अंजाधिसर्वनिकासखजरीयेवरं कुंज प्रपित्वा स्वायेन सरावयगलेति

चाहुं दे मोहयेनां वसतां नयचाहुं की स्वाहा वा माचारका विचिने पलासका पुस्तको माता गी यो मंत्र कलापज
पगल पलासे का पुस्तक सहज आहुति हो भगवत मंत्र सिध हो वर तस सिध मंत्र ले सात वै भन रिज सत्री
साई पुस्तक सिध हो वस कुंछे ३१ ३२ ३३ अथ पद्मिनी नायिका साई वसगरी न्या मंत्र कहिहू हीका

॥ ४७ ॥

चाहुं दे मोहयेनां वसतां नयचाहुं की स्वाहा पदां नई सुक्ता चाहुं दामंत्र उत्तम ३१ पलासका
मुं येरे नद्वे जसा दसां सत हो मेन काम विचिना सव सिधिं प्रविंदति ३२ मंत्र ले निचं ज प्राप्ति स
पुचा कुमुमानिच दत्ता निवसगां कृपा का मिनिनां वस संसय ३३ अथ पद्मिनी वसिकाणं ~~का~~
मेव पदं पूर्व ही कारा दिवी मोहय स्वाहा तंत्र मनी मंत्र नागवली दलेली खेत् ३४ पुष्पगा
म कुमुते नरवी वारे निमंत्रिचं सतेना दियमाने न पद्मिनी सतां नयेत् ३५

मेव रवि मोहये स्वाहा यो मंत्र पुष्प नक्षत्र पन्था का आदित्य वार का दिन महले पान का पत मासे
वितस को विडाल गाई पान दिज अथ वायस मंत्र ले एक सय आठ फेर मंत्रा को पुस्तक गाई उन दिज पद्मिनी स्त्री वस कुंछे
३६ ३७

अथ चित्रिणी नाई का वसगरी मंत्र कहिहू हीं हीं विदग्ग म काम दे पायत लै स्वाहा फुल्ली जाय फल
को कुलो के सको गाना का स मा निजाई धाम मा मुकाई पान का निच हाति विडाल गाई स मंत्र ले अष्टोत्तर सय फेर
मंतरि जादि स्ववार का दिन मा चित्रि निहू ली साई पान दिज स मंत्र कुंछे ३८ ३९ ४० अथ सविनी साई का लो

॥ ४८ ॥

अथ चित्रिणी वसिकाणं ही कारा दितय प्रोक्ता विदग्ग म पद द्यं काम दे वायत लै च स्वाहेत्यष्टं मनो म
व ३६ पिष्टा जा फल रंज मुल तोय न नावयेत् मयोषा जा कुकि सो न गवद्वी रले सिधेत् ३७
निमंत्र्या लेन मंत्रेण विवारे प्रदापयेत् यत द्रष्टा मा मंत्रेण चित्रिणी वसमानयेत् ३८ अथ स
विनी वसिकाणं नमो तं चो मिति पदं स्वाहा तं च पद द्यं अयं महा सिद्ध मंत्र कीर्तित पूर्व
स्वरिनि ३९ मंत्रेणानेन संजतं मुलं तमर संनवं श्री फलं चैव वाप द्यादु विनी वसमानयेत् ४०
इव सगर्वा मंत्र कहिहू हीं तम स्वाहा सिद्ध मंत्र नामा यो मंत्र हो एत मंत्र ले अष्टोत्तर सय फेर
पन्था को तमर को जो अथ वा वेल को फल हात मा दिना मंत्रे सखे नी स्त्री वसि कुंछे ४१ ४०

अवहस्तिनीनाईकात्रीलाईवसमंत्रकहेहं हे विरिचिरिकामदेवायतसौखाहा पोवाकापुद्धकापोंर
 कोठलोमहमाभिसियसमंजलेयकस आठफासंतरिहस्तिनीजातिकात्रीलाईदिउदीनीमालेवेहस्ति
 निधीवसहेहं ०१ ०२ अवनानातरहकापुद्धकापोंरनप्रभेनिकहेहं नानातरहकासुरतका

॥०८६॥ अवहस्तिनीवलीकाणां होकारोचिरिउमंचकामदेवायचेत्यथ तस्योस्कोहेतीकहेतोमंत्रअेशामु
 निउवे ०१ कोपोतापिद्धंमपिषमधुनाधविमिअयेव मंत्रपातेनतपांनादुस्तिनिवसमातेवेव ०२
 अधगागादिकमुचते संजुह्तितानुगमागांरपुसवविलासिनां कामिनाप्रितिजननमंगरागादिकं
 पुवे ०३ चंपनीसीरपदार्तिलोवाधतसमुद्धवः लेपः खेवजदोगविंदरत्पाप्रविलासिनां ०४

विलासकनजाग्यापरसारवडोप्रितनपायसा दुवैवीप्ररुपकाप्रितिनिमित्तसरीरहुंगविहुंवाडपापका
 हेहं ०३ नीखंडुसीरजेठिमपुद्धलोव आपकावसवोका एतिवरीवरमागागीपानिसंगपेविम
 ०४ रिमालेपलगाडनु पसिनाको दुर्ग चजा ह ०५

हेरेंनिमकायात लोव डाडिमकोफलकोवोको हस्तिवनकोवोका एतिवे
 मंजुर सरीरको दुर्ग चजाहं ०५ आपिलीकोफल अवितासकाविषाहं
 लमापिबलेपनगर्जर कपिकोपानि अतसरीरकोपल्लो दुर्ग चजाहं ०६

॥०८७॥ प्रथानिवधलंलो वंपादिमीसपूपत्रपो वल्ल
 मविजेरथ हरितकी विलवमुलेनकक्षारि हंरि
 लिखांगविनेहत्पाअदुर्ग चधर्मवा
 पालप्रधर्मोत्सासनम् ०८ पिमुमदिपलाके
 पुनोपायंमंगदुर्गचनासन ०९ चिंचाफलकांज
 रीपुव ०६ नागपुष्पाग्रहसीरकोमजोपुचवने
 वेरुजोरे पुष्पाग्याजंगुफलांसमयतेहेनिबधे
 मल्लाले ०७ अधकालेनिप्रा जोधर्मवाीचयंजपेत् ०८

॥०८८॥ वरकीपुदिउमचवाला श्रीसंडएतिवरीवरमाग
 हस्तिकाजरा तसेकोप्रल जामुनाके
 निमकायात कमलालो व दाडिमक
 राधाहल
 पसिनाको दुर्गचहुद्धरुव्या ०९ पिव
 सरीरमालेपमर्जर पसिनासां डेंनम् ०८
 मारिकामयमासरीरमालेपमर्जरपसिना उं
 उदेमन् ०९

मिरिपकेसर रसिरलोव एतिवरीवरमाग
 देन १० अवअह्मानमर्मातेपगनालेउ
 अलोकाकोप्रल केतकीकाप्रल ११ एतितेलमाहलीधाममापुकाउनु पदिप्रलअक्यापदिनिकासिलेउ

॥०८९॥ मिरिपकेसरीसीरलोवेरंविह्ममाग मद्रक्षणाचधर्माधुनिदाधेनेवजायते १० अधहानीय
 उमंचिविवि विल्वपत्रंमरुवकमसोकप्रुमानिच नमातुपानिकेतका धिंसांनेलेनिवापयेत् ११

॥ ४२ ॥ निरीपकोसरोसीरलोखैरंगविरहामात्र नद्वेषाणासुधामात्रिनिदाद्येनैवजायते ५० अथस्वानीप
शुभंविचिचि विल्वपत्रंमहवकमसोककमुमानिच नभातुपानिकेतक्याधिनातेलेनिवापयेत् ५१
आतपेक्षप्रप्यानिततोनीकासयेनरः महापरिमलंतेलेखातयोभंवितासिनाम् ५२ यत्तां ७२ न
स्वस्वामासिकपूरपत्रकै स्वात्वाश्रगंविपरमंशुर्वजानांनिनेदिने ५३

२ स्तरहलेवना वाकोमहापरिमलनामतेल वडावडा नोगीपुरुषले वषट्पवपुनमासीडुवोग्य ५२
७ पूर्वे मे मोथा नीले नागे अर जामासी कपूर तेजपात एतिवरोवर नागगारि पानिमापिं वि कपालनहाड
उरकेससदे सुवासितरहं ५३

अवला नागे अर मोथा डसिर हरी जामासि एतिवरोवर नागगारि पानिमापिं वि कपालनहाडं पं अदिनास
मम हों डनाले केसवकुन श्रगं वडं ५४ अवं समान्य श्रगं व कहिं श्रीखंडं सुपुं मे ल कपूर तेज
पात सेजन हरी श्रगं विवाला मोथा अं वला एतिवरोवर नागगारि पानिमापिं विलेप गं र सीर श्रगं वरहं

प्रपूणा चानिस्वादिधनोसीर पथ्यामासी विलेपने स्वात्वामसार्वमाचने केसमोर न्यमुत्रामम् ५४ अ
थलाभाश्रगं व वन्यनेलासिपत्रसिगुपथ्यां उतोये सामलेले वड सोडुगं वकाचवध
न ५५ कपूर कुंजमलो वृक्षो मो वंजलममुद डसीर च समे रिलेप स्वात्पुरासिपर पूर्व प
नां वचन जोसीर हाप्यागु रसमु देव लेप हतोयमके पुं सीर म्यपरमनि होय ५६

५५ कपूर कुंजमलो व जे आं आकुहो श्रगं विवाला मोथा डसीर एतिवरोवर नागगारि पानिमापिं विले
प गं र सीर श्रगं वडं पूर्व तेजपात श्रगं विवाला श्रीखंड डसीर हाप्यागु र एतिवरोवर नागग
रि पानिमापिं विलेप गं र अतिश्रगं विलेप रडं ५७

अथसर्वोत्तमश्रगं विलेप कहिं कटहरी नागे अर कुंजम श्रीखंड मोथा खोपे नागे अर कपूर च
मेलि जे आकुहो देवार पूर्व एतिवरोवर नागगारि मसि नगरि वि वलुमाहानी पांनकार समामिताई ले
प गं र सर्वे वां हि उत्तमश्रगं व सीर डं योराजावाजी रायक कोलेप हो पूर्व एकनाग मोथा हरी रा

प्रपूणा अथसर्वोत्तमश्रगं व कटहरी नागकुमुं विलेप च वनं धन श्रीवस कन व अन्दो जाती स्थो मे
यपुनिकम् पूर्व ७ श्री वृषि दे रिलेप नागवद्वी वलो देव रिलेप श्रगं चोपमनी यो गो मरि
उजाम् पूर्व स्वातो पदस्य नागे कं पथ्या नागचतुष्टयं व्याधिसो रोय वं द्राणां प्रतेक नाग
मवेत् ६० सिला मजस्य चं च मुनं व नागा नवित्यु एतिरुतः श्रगं वीयं कलुरि दल संराक ६१
रनाग जे आकुहो ई माग कड ई नाग कपूर र नाग सिला निना नाग ना नी मे नाग

रमाग ने ड्राक होई दुं माग. कर दुई माग. कपूर दुई माग. सिला जिर पाच माग. नखीने माग. एतिका
मसि उगुर्ग मर्ग. पानिमा मिलाई लेप मर्ग. आयत उगुर्ग चसरि दुं छ. यो कसरि दलनाया उगुर्ग चहो ई० ई०

नखि. हरो उसिर मोध्या. जनामासि. सिस. कुवेराधा. एतिका एक एक माग. नो गेवर को फुल सुगंधि
वाला. एतिका दुई दुई माग. कपूर. आगर. काली. चमेली. नेट्रा कुहो. एतिका निन तीन माग. उगुर्ग
रि. पानीमा मिलाई लेप मर्ग. आयत सुगंधि सरि दुं छ. यो लेप सोर मग. रनामा हो. सवे लेखि जन को मन हेन्या व

॥ ५५ ॥ नख पध्या नया नो दमांसी सी सकर जिवा. समारवाणि नो सोरुत प्रत्येक माग. पुगमक ई२ कहिमात
कसुरि जाली सोरोधक सधु. जगत्रिक स्यात् प्रत्येक सवे रमिर हो चाने ई३ लेप सोर नगार्ग स्या. सर्व
लोका मनो हर. मृगु जामे वयो पोष मये पा दुर्लभ पर ई४ अथ मुखवास विधि त्वक सवेला
नख रवाणि जति नि करये हो. ता उलपुतां माउ तावक मुरमितां नयेत् ई५
उावदार जाम विप्र नृनिताले वर आदिका यो गहो ई२. ई३. ई४ अथ मुखवास विधि ज
व मुख को दुर्ग चिजाना मुख सर्व वां सुगंधि रहना उपाय कहि छ. दाह चिनि तेज पात. उपमेय नखि
नागे गेवर को फुल. चमेली को फुल. एतिका वर माग. गारि जल मा मिलाई पिबि विगो लिव. पुन. तिगो
लिपान संग पाउर मुख मा पडो मुख सके छ ई५

केसर वयर को फुलें गहि नेट्रा कुहो. चमेली को फुल. श्रीखं दु. एमिबरोवर माग. गारि पानि संग मिलाई पि
बि गोवा स. नो गेवसि मुख मा हालि राधुर. मुख मुख सधु रुदुं छ ई६ मुकी जलो केसर उगु. एति
वरोवर माग. गारि पानि मा पिबि विगो लिव. पुन. तिगो लिपं. पुदिन संमसं. रवि हान. मुख मा पडने रह. गर. कपूर
जलो मुख सके न्या उगु ई७ माध्याह्निका विद्या कु. एति वरोवर माग. गारि चूर्ण गी घृत महेमा

॥ ५५ ॥ केसल को लम जाव सो रोयं जाति चंदनं वीका वदने ते पां हुता वं कं मुख सवेत् ई८ मुग कि ज
एक कुशनां उगुली दुर्गि सं वायो कपूर गंधि वदनं कर्पण मा मा र्चनो पुवं ई९ कां को जी वीज कुहो
मं चूर्ण मि पुध ता चितं यो लेदि मा संत द्रु कं केत की मं च व दू वेत् ई१० आयु पत्र से दार मा र्ग ह
क्ष ने व क्षि पेत् सं सोष मा न कि रौ नो क्षे मा ह ल म धा ग ई११ प्रात. पुति दिनं य सु पुग चि स्या त
दानं सवे पु मुख वास सधो गे ध व म उ त्त म ७० इत्यनं गे व सी करण सुगं वा नि त पाना नाम ७

मा दुर्गि हान संम जि हाले चाटे रह. केत कि फल जलो मुख वास मुख दुं छ ई१२ आं पका पात
कोर समा. आप मा र्ग को द्या मिलाई द्या म मा सु पाठु. नो पान संग मिलाई प्रात. कार मा स धै पाउर स
व दं सुगंधि मुख दुं छ. मुख मुख सग न्या येति ओषध मा यो प डी कहि या को. आयत उ त्त म जा नु ई१३
७० यो अनं गं ग ना मा पुं ध मा वसि करण मोहन सुगंधि काना दि कहि या को स प्र म ह पर समा पु न यो ७

अवआफुले विवाह गाना रौप्य कृत कटिं छत्र सुर मया का विवेक
ले पुन मया का कसो उपापदापनि सिद्ध वे रमिया का जाले सुख मौर ह
का उपा प्रवर्म मार ह न्या प्रसिध मोड मया का वन दोल थ को धे ३ वर्य मया का उ
फुवरो व रका यता फल माड मया का कि कन्या स्त्री का फल मया मा कहिया
फल दाण न मया की स्त्री लक्षणा का ग्रन्थि मुक्त नी की यों दा जू मार मया को

॥५२॥ अथ विवाह क्रोदः विद्या सौर्य विवेक वैर्य सिद्धि श्रेष्ठ चर्म स्थित विरव्या
ने वन चान्य वे न वर्य ते जाता समाने फले कन्या दोष विवर्जिता ग्रावती स
तका सुन्दरी सङ्गि सावु विवाना र सम कला या ग्या विवाह सदा १ अथ क
न्या लक्षणा नी नीला मोरु रूप का निरथ वा सर्प प्रमा मा सुवर्ण नी नी
सिरोरु हा समीप

सुन्दर रूप मया की काम देव काना ना तरहे का कला प्रकास गान्यो य पात्र मया
कि यति कन्या सा स्त्री क विविध सत्पुत्र पै विवाह १ १ अवआफुले विवाह गान
यो ग्य की कन्या का लक्षणा कहिं छत्रा सिद्धो सावली वार मया की अथ वार द्यो
X मोरु स्त्री मया कि का निवेदो मरज सा विद्या ड नि काला के स चन्द्र मा ज सो

अव मया का वचा का जलाने न मया की तील का फल जलो सुन्दर ना कु सुन्दर दात सुन्द
कान मया की को किल का जलो सुन्दर स्वर रव रूप का जलो निने रवा मया को गली मया की
पाव्या का गो ल को नि ज सो जो मया की २ चर्म मरुत प चर्म वज्र प्रनति
सुलक्षणा का चिह्न मया का लाल हात पाठ मया की पत जो कटि मया की ठीरी आहार के

स्त्री सार ॥ सवेधना ॥ स्याद्य स्या हिल क प्रमुन मरु सी ना मा सुध तो वति मुद्रा त्रा
पिक ना पिणि मुजल ग्रीवा थ विवा चरा २ चका अकि र सो न्या नि चर ना के मो धरि स्व
पु ॥ २ न म सं न म नो मो रय गला श्रान्या ह ह न्या चिता ना म्या चे व सु नि न या ग ज
॥ नि सान्ता ल नि द्रान् चिता सी ला धा फु पा रि का न र वे रे कन्या विवा ह्या सुमा २

रा का सं न जलो वीरो वर चण्डाई उतार मया का सुन्दर तिग्रा मया कि चा कला पूरु चा का ॥

॥ निम्नान्तात्तु निधानि तासीं ताया कृपुपरिकाने रवेरे कन्या विवाहा सुभा ३

राका संन जलो वीरवर चढाई उतार नया का पुन्येति प्राप्ता या किचकलो पूष्ट चाक ॥
हिरो नानि हे निका जलो हिडाई नवीयै सा तस्वमाव कि निद्रा धीरो नया कि अक्रमार ससि
या की वडिया सिल नया की रतिकन्या विवाह गर्भ यसा कन्या को सुलक्षण जसा खलेवता ईया
या छन्दो पोशाख वडिया गरि आउ न्या ले कन्या लाई ० हरा ५७ ३

अव विवाह गर्भ योपन नया का कन्या का कृतधन क हिंदर कृस्वमाव नया कि कैलाने
रके लोके स नया की अदिछो विदुत अली वहुत उवली लामा चढ वाचु लो ग धन ववे
आहार नया की काला वठ तुला दात नया की चोरे कचुक चाक ये वेल न्या एक मानु एक सन पुतो
नया की चाडो हिडन्या नाउ ला जसा सेवुग साना कान नया की मिसा हि पुसे वेहरा अति पतलो

५३

अथ कन्या इषणानि कुरा पिणाल के लोचन वती रव निदी दी काला लो वडी पुष्ट क
वरानि चहु उकु श्यामा चराय नुरा वाचला विषम सनी दुत गति सुय अवा को पिनि रक्षा
पद वजि हि कानि कठिना सम अकालो ममा न निद्रा लोक वनी सदाथ चलने यस्था
एक मोठ वरे हाने चावि नर गितो पुन वतो हवो न सं च

जिबो साटो सरि नया की गुंथा नया की सरिमा रोम चोरे नया की पुलो लोक न्या वि
र निद्रा नया की हिडुया मावठ थक न्या हास्य मागला वा उरिया अवि कच चल स्व
भाव नया की पाउ को वडि अउठा मंडा पछि हो जो वि अउ लोला मुनया कि पाउ को का
दि अउला मंडा अधि हो सा अउला अउलो ले हि डु मा मंडा न दुन्या नया कि
पाउ को सा रिता

अउला नन्या माहिनी अउला हो नया की पू कल सिल न जाना कि पर्वत को पदि
को दक्ष को लता को नदि को नक्षत्र को नाउ नया की अवि कदि रो स्वमा वनया कि कैले जो
पचले प्रमिनि को नगराई सकु दी धीरो ग नया की अवि मे जो रिया कि लज्जा लज्जा

५३

अथ अंगुष्ठा य विवाह ने न दुपगा पाये नथाना भिका पखोण स्यासी सपे
य्य न वे न च्या तु हिना प्रका पू अशाता गिरि पक्षि मरु हन विनक्ष वसरा
नया प्रो दारो ग स मा काला च सवल हो वदरी निखपा गणै कपयु गा न्वितो वि
द वनी ही ना वि कां गीत थाडु सीला च विवाह कर्मणि सुदा त्पया वला पाउने छ

नमा न्या हास्य वी लरगा ला माखा डल्ल पन्य अंग ही न नया कि अवि क अंग न

याकी दुष्ट स्वभाव नयाकी यसी कन्या कन्या नाना प्रवृत्ति विवाह नाना

X अवकन्या धिनयो पवर को लक्षणा कहिं विद्या नया को पूरे स्वभाव वर वन व
कुल नया को नाना तरह का गुण नया को देखे सावर मानो उ चला को गुवाजी
मुन्यर मान सध्या सत्कर्म गन्या विडा कुल मा जग्या को म भुरव वन वी लना
वडोया नायवे प्राणि माध्यागन्या नाना तरह का वस्तु को नाना जाना यजु

५४ अथ वर लक्षणा नी विद्या सौर्य वना श्रयो गुणानि धिरवा तो युवा मुन्यर
स्वाचारः शुक्र लो दु वाम भुरवा कदा नायया सामर जोगी भुरि कुं व वान्
स्थिर मतिः पाप धि नी तो वति जामा ना परिकीर्तितः कवि वरै र वति च
मनम

भाई कुल गुं व डेरे नया को अंगिकार गन्या का कर को पार लाना उ न्या यधि
स्थिर उ वि नया को पाप पतति क कर्म दे पि डरा उ न्या वतियो सरिर मया
को एसा वर लाई कन्या धि नु न निबडा वडा जान्या हरे ले शास्त्र मा क हा को छे

अववर को दोष कहिं छुन उरो हथा भि को र मदि रा भा उ पुनी नी न नि का
नर को व्यस न वडो नया को निदुर की ले ओ प वले पनि नि की न गरा स्य ह
धरी गी नया को ब्रह्म हता धि पाप ले उ न नया को न पुंस क दुष्ट कुल मा उ न

५४ अववर दुषणानि ह्यो दुर्व्यस नो यथा विरहिनी रोगि महा पाप वान् र प
रो वा दुष्ट कुल मा दु व श्वा पि नो धु मे नि व द्द ह्य ह्य री दु क पणो ति सं
वत मति निर्म न्य प्र वा सी र्द ए नि शु धे ह वि व र्जितः शुभ नि मि कार्यो वरो ने द स र्द

नया को अवा की कुकुल न्या गुवा मा ला नया को धरि दि द्य पणि च वल
दि नया को सुवा परे द स मा रह न्या अ का को रि रा पा ना नि द्य क को ले लि न पि
नि न रा पु न्या यसा वर लाई जान्या ले उ दि मान पुर प हरे ले कन्या न धि नु र्द

अवपरस्त्रीममनरको दुष्टधमनि कदिंठ परस्त्रीसंग सुरतागनिलेन प्रध पू दुष्टवि
रिखीय दुं छ अकीले ७८ परिगछर निन्य पनि वडो दुं छर वनपनिपरापडे छर त
एक पनि वडो दुं छर परलोका मानरेक मावा सडुं छर एसा एसा दुष्टफलपनि धनको ह
रा लेजनाथ पनि परस्त्रीममन हो त एसा परस्त्रीममनले वडा वडा पनि नष्ट नयाका

५५ अथपरस्त्रीममननिष्ठेव आश्रयतिविकलतात्पुपहास्यताचनिन्यार्थदानिलधु
ताविभक्तिः परत्र स्यादेवयच्चुपिरितेनपरांगनाया प्रादुस्तथाप्यनयमित्यपिकारने
न ते लंकेस्वरोजानकजा हरौ नवाकीतारापदारकनयापथकीचकारव्यः पांचालि
काग्रहलानेनिचनंजगामतद्येतसापिपरदारमिन वीं छर १० १० ११

चाकरदिं छर सीना हरणानलि रा वणभारियो ताराकनरागनिले वालिभारि
होपतिसमातनाले कींचकभारियो तत्कारणले परस्त्रीसंबाको ईछा सर्वथा नरापूर्णः १० १०

अवडा कीले विवाहगम्याकार कन्यावाहिकसामानास्त्राको गमनकेहिकारनवसलेगर्भधुं छर
निकहि छर ४५ सीमा छ विलागिरहेन १७ गदिनाले एका ठोडिमा वछनमंनु रमन उसेस्त्रीमा
लागिरहेन ३ उसेस्त्रीका पुतिले निद्रानला ४ सरीरक्षिण दुहुनु पुलाजानला ५ छे उसे
कननपाडनाले चदन फलमातागहेनाकपद्रयारा ११ पुष्टतिविषययपिविरक्तहुनु

५५ उर्वसी सुरतचिंतयाययोसंक्षयंपुरवाचपः रक्षमायनिजजीवितस्य
तसं नजेत्परवचुंनकामत १२ १२ १२

वडोला ५७ टि मुछितहुनु त मुत्पुहुनु १० कामदेवले पीडितहुं यामा य
यस अवस्था दुं छ मनि पंडित पंडित हल्ले मन्पाको छ ११ उर्वसीनाले साअसयसंग
मगन नपाडनाको सोकले पुरवा नाथ जयाका वडो राजा नासकन पाया तत्कारणले प
इकी विवाहित स्त्रीका न्या पुष्टति अमपस्त्री कनछाडिकन सापना जिउको रक्षागनानि
नेसा मान्यस्त्रीको पमनगर्भ

ये वनसे मत नया की कहे लो मोहित नया की यति खीले आपन चितला ग्या का प्रहसंग सुरतगर्जना
न्या की विधि प्रथम निहंछे नरो पनि पाउं छे तस वारा नडा कि ओ फे सुरत कोई छारा पि को हिसा मनी पत्नी
आफु छे उ आइ नन्या तम मन्त्री संग सुरतगर्जना तपता न नया ~~आ~~ आपनी स्त्री वाहि का अर सग सुरतगर्जना

पूछे वारि चो नत यो वारा मिल पितं का तन चै यानु पाडु न्मा पं सरा च विवति दोसै कं वर पिय मोहिता
न चिते तिस मागा तां पर वंछं न र्थि नीले ~~छ~~ या गे छे का पि न स वर ~~व~~ व द्य लु मति नानिया ते वा
न्या यन १३ अपि दि ज दि ज श्रौ त्रिय नु प मि न स व वि ना य यि पंच यु ता लु स अ य दोषा
य न चै त्या छे ~~छे~~ हो उ मा काम न ये प नी व १४

छे न न नि वा न्या यन पा म म निले न न्या की छ १३ वाला राजा मित्र आपन साहिज ला
या की म न य चै य पाठि रति जना कि छि सुरत कोई छारा पि आइ नन्या नि निहंछे संग सुरतगर्जना छे न क
दा चितानि उा फे ले ई छारा पि डा कि र निले संग सुरतगर्जना को न वाते छे न १४

अव कदाचित्प निमुरतर्गुनी स्त्री कहिं छे कन्या सन्या सिनी वे रा गिनी प्रभृति नैष वारि नया विस्त्री परि
वता स्त्री सत्र कि स्त्री मित्र कि स्त्री योग लाया कि स्त्री ब्राह्मण की स्त्री जात वाहिर नया की कि स्त्री विधि पूत्री
के हिसा हिन् लाया स्त्री आपु न न्या अ वि क उ मेर कि स्त्री आपु न्या उर पुरो हित की स्त्री

पूछे अथ गम्या स्त्रिय उच्यते कन्या प्रवृजिता सती रिपु व न मित्रो नारोगिणी सिष्या ब्राह्मण व द्र माध पति
तो न म न्ना च सं वं धिनी वे द्वा उ उ न्यार्य व उ श्र ग र्म सहितो ड राना महा पापिनी पि गो क छु त मा स द
उ व ज ने स्था ज्वा ई मा यो धि नः १५

छ म हि ना उ प्रा न कि ग मि शि स्त्री न चि द्या कि छि महा पात क ला ग्या कि स्त्री के ला वार की स्त्री अ वि क ला ला वार
कि छि रति न रहे का स्त्री संग जा न्या म न य ले र र न न १५

अव आपन चितला ग्या की स्त्री लाई फालाई आफु छे उ त्या उ न स क न्या हलि वाहिं छे मालीनी ना च न्या
गाड न्या स्त्री विध व क उ मे की स्त्री चाई उ मे कि रं गिनी उ मे का ध र व सी उ मे को अं गारो रि पि न्या स वे का ध र पे वे स
नया की उ मे की वे वि नी र क प र रं गाड न्या स्त्री उ मे की दा मि उ मे को के हि मा हि न् ला ग्या की को प के पि स्त्री

पूछे अठ हति लक्षणा उच्यते माला का ख च न रि च वि च वा धा मि स र्वी सि ल्पिनी से स्त्री प्रति गहि का ठ
र ज की द सी च सं वं धि नि वाला प्र वृ जि ना च नि द्य व नि ता त क स वि त्रे पि का मा न्या का र उ वि द्य व प र छे १५
स न्या सि नी प्र भृ ति नै ष च रि न या की त्रि य मं गा की स्त्री धा र द र जा ई दु य व चि मा हि प नृ ति ई मा डु ति का १६
ले प न्या या कि चि त्र वि चि त्र ले प न र व ना उ न्या स्त्री र ता त र ह वा स्त्री दु ति पा ठ १६

लेपन्यायाकिचित्रविचित्रलेपनरवनाउन्मास्त्रीरसातरहवास्त्री दुति ॥ ७० ॥ ७१ ॥ लेपन्यायाकिचित्रविचित्रलेपनरवनाउन्मास्त्रीरसातरहवास्त्री दुति ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अवतहजेलेआफरावमगर्नसकिन्नास्त्रीकहिंछन् लज्जानमयाकिविचवाचानानरहवकलादि
नोयजान्यावाचचित्रगर्नामाताप्रमयाकीअमागिनिनप्रमकपतिहन्नास्त्रीहुलोछुडिचालपतिहन्नास्त्रीअ
निनिदयपतिमयाकिअतिप्रमयापतिमयाकीछेठास्वामिमयाकिअतिनराप्रोपतिमयाकितचैवहिलामाव

५७ अथमखस्वाचाक्षया निर्लज्जाविचवाकलाभुअमलगीष्टि परादुर्गालीवस्थुलाकछोरवाम
नजरदेवपमायष्टिवाद्योवस्थिमसीलीका उतिचपलाचंचामहामानिनीपुत्रग्यानरणीमहाविदि
निमाचापुखेनांना ७०

मिरहन्नास्वमावमयाकिअमिचंचलस्वमावमयाकीवांफिचदो॥ वमईकोसेलाईनमान्याआफराधरपरिव
रदेविचिरनमयाकीअत्यंततरणीरतिमाएकेलक्षणा मयाकीयसीस्त्रीलाईदुतीओतनीलाईप्रलाउव
मासहजेआफरावमगर्नसकिच्छुईचारलक्षणा मयाकीतचाडेवहजमावमहुग्छ ७०

अवस्थाडवत्किनार्काआफ्रलोडुतिप७७उंदाभापितिराषछेरसवसडाउंछेननिकहिन्छ लज्जानमान
हसिनांवेभुवगरिआफ्रासामनेहेन्याविस्मामानायककनेवृतामानुमिमानयलेकोन्धी लनप्रममिआफ्राअं
गकेहिप्रकासागर्न्याव्यंगेपाउन्ना व्यंगेवातन्ना ७१ प्रकनेवृतामानेछिआखालेहेन्या ७८ कहिंछे

५८ अथानुरागिनीलक्षणा लज्जानचने उ निमखंचपसेध्रुस्थनमिविलिधेस्थितच वनति
गात्रंकरतेचव्यंगंछटाकाधनयनेविद्यार ७८ छद्वास्फुंममिमेतमेववाक्यमेनेवृजेत्माचरावृज
नमर बिलोक्यंतवात्रकथाप्रत्यं॥ उंछेवदेस्वापरियर्तधन्ती ७१ ७२ ७३

७४ मयामाप्रपलाईहस्यमखलेवने गरिकेहिलोचन्याकंप्रमजंवेमयाआफनाअधिपति
हिडन्यासंगिनिचाकिलिममेतआफ्रपनिपक्षिलान्याकहिप्रपलाईदेवृतामाकेहिअराकानि
हुनालेसाहेवोलिजनआप्रलाईदेवोदरन्याअभिप्रायराधूना ७४ ७५

प्रपकाजोनित्रधननमाआफ्रपनिवडोपीतिराधन्यावारंवारनकावीकनिछन्कलाडेवृताव
छन्कोरस्त्रीमावडोप्रितिराषछन्मनिप्रपकावार्तासोचैरहन्ना २० प्रपलाईदेवृतामाह
मलेसआफ्रासनमदनगर्न्याअईलामाचन्याजमाज्ज्याहुनाकपराप्रममिअंगारवृनलाईप्र

४
 रवेधिविरक्त नया की अत्यंत तरणी रति भार के लक्षणा नया की यसी स्त्री लाई दुती ओत नीला लाई प्रत्या उ
 मा ल हे जे जा मर जस न सकि रह दुई चार लक्षणा नया की न चो डे लह ज मा व म ह रहे १७

अव एला ड वलिक नाई का आ फुले इति प ७ उं द मा पि ति रा प छे र स व स डा उं दै न नि कहि रह लज्जान मान
 ह सि जों दै भव ग रि आ फुला म नै हे न्य वि स्या माना य क क ने प तामा नु मि मान थ ले को न्यी ल न प्र न मि आ फुला अ
 ग के हि प्र का म न्या वी गे दे पा उ न्या वी गे तो ल न्या प र प क नै दे प तामा नै छे आ खाले हे न्या १८ कहि रह
 अथा नु र गि नी ल क्षणा म लज्जान च ने उ नि म ख च प ले द्वा स्त्र न नु मि वि लि धे स्थि त च व न ति
 पू र्ण ॥ नं क र ले च वं गं द द्वा का ध न ध ने वि द्वा न् १९ द्वा स्त्र नं म मि त मे व वा क्य से ने व जे त म च रा व ज
 न म् वि लो क न व ज क था प्र तं ॥ डे डे वी दे स्त्रा प रि द र्श ध न्नी १९ १९ १९
 ६ भ या मा प्र प ला ई हा म म र व ले च नै ग रि के हि ले च न्या कं प्र स जों दै म था आ फ ना अ धि ॥ नि
 हि ड न्या संगि नि च क रि ल मे त आ फु प नि प छि ला न्या कहि प्र प ला ई दे प तामा के हि अ रा का नि
 हु ना ले सा हे वी लि क न आ प्र ला ई दे पो स्त्र न्या अ मि प्रा य स न्या — १९ १९

प्र प का जो नि त ध र न न्या आ फु प नि व डो प्री नि र न्या वारं वार न का वी क नि छ र च लो डे व लो व
 छ र को र स्त्री मा व डो प्री नि र न छ र न नि प्र प का वा र्ता सो दो र हे न्या २० प्र प ला ई दे प तामा ह
 म ले स आ फु म न म र न ग न्या अ ई ला मा च न्या ज मा उ न्या हु ना क प रा प न नि अं गार व स न ला ई प्र
 न नि म त री प्र ण य ति द व्या दि ता दि वा र्ता म ल क र छ र क नि स्त्री यो ज स्या य म क स्या म यं पु म
 पू र्ण न स मि च ने २० म ड नि द द्वा वि अ च को र ल म फा ये दं डं ग लि का म जं म म न्द प वि हि
 नानं द द्वा नि त मे स दं ल नं य वि त म प ज म २१ प्र प नि ना ह ति त था नि तारं सं का स य न्या वि च ज
 को र ॥ वी जे ना छे ल स द नं कां धि व के प्र ध मी व व दे दि लो क २२ २२
 को दे पाल प न्या प्र प ले के हि मा गि प ७ उं चो डे दि न्या २१ का हि प्र प ले हा न्या हु तो स्त्र ग रि प
 कार पार न्या पा म रा मा हा ग ले च प मा न्या के हि छ ले प्र प का ध र मा अ क मा दे जाई जा न्या या प छि प्र
 प ला ई दे प तामा ह ह न पा उ म र व दे वि प लि नां का पू न्या २२ २२ २२

कार पार न्या पाशु राम हा गले चाप मान्य के हिंसे ले प्ररुष का घर मा अक मा दे जाई जान पाया पछि प्ररु
पता ई देवता मा हा हन पा उ म खे वि प्र सि ना का पू न्या २२ २२ २२

४ सा प मा चि ह ले पी नि रा प्र न्यार हि छ न नि जा नि क ति सं का न मा मि ना ई का छे उ का मे दे व का ना ना का
ता मा अ स ल न पा कि छ नी पा उ न र सि क पु र ष ले २३ अ व र ति ना ई का क पा चि त नि आ फ र स व न
ह न न नि क हि छ आ फ र स मि मा व डे पी ति न पा कि आ प्र र के री मा त्रे ग म न ग न्य ति धा मि न पा
इ त् पा दि चि है र न शा य तां रा न्वा वि द्य षां म् मा व का थो म् स धे र्प ये तां प्र ति नि वि सं को ड
पू ते ति त्व र का म क ल प्र वी नां २३ अ थ डुः पा ध्या ल क्ष ण म् न न्ते स्र ह व नी छै क व नि तां प्र
मा वि हि ना न्ते स्र स धा न्ते स्र स धा न्ते रि त ना न्वा च न्ते य तां व दि छि नी ति स्थि ता प्रा न्ना र्थ व
ति त्था पर र ज ना ला पे वि र ता स ध नि ले मा व नि चार क र्म नि व चै ड रे व न सा ध्या ल्भ ताः २४
कि पर प्र र ष मा स र्व धा पी ति न ग न्या पर प्र र ष मा ई पू र ण्या चै र्दो र छे रि न या कि वे ड ल ज्जा मा न्या
सा सु स सु रा पि ता मा ता प्र न्ति नि मा न्ता मा नि स को न ये म या कि त्वा न पि ता न्ता य को ध न चै र्ज न या रि
प रा ई स ग वो ल न स र्व धा म न्ते ल ण्या लो न न म या कि र ति स्त्री छे उ व मि चार का ई छे ले डु ति न पा उ न र २४

अ व न ता वि लो मो ज लो ज ग र ता न्या है सो कहि छे - आ मा ग का व ल ण का मा न्वा मा शि स का
मा ता पि ता का सा स स का ॥ २५ प्र न्ति नि न नि क मा न दि मा दे वा ल य मा को ड की ला मा नो वा
अ थ ता ज्य था ना व स रः व दि व्वा ल णा प्र ज्वा नि की ड न यां चै व वा ल ये डो यो च च र ष
पू र्ण ये पर र्द हे रो प मा नि पि ता सं का नो म सि स र्व य थ स र दि श्री मे ज्वा न्ते व ने सं चो थां च पी श्र मे प्र स
इ तं जे र्थान्ति वि द्य क वि र २५

४ मा अ का का घर मा व डे ज ग ल मा स मा न मा र ता ठे ड मा र त न ग न्ते सं का नि का र त मा अ मा वा स्या
का य त मा र र त न ग न्ते स र य मा र मा र शि ष न न मा चै र स र त न ग न्ते ज्वा पी द न या मा व त का
दि न मा प्रा त का ल का संध्या का ल का दि व स मा व डे पी श्र मा रि आ या मा र ता व ष न मा छ चि
मा न प्र र ष ले र त न ग न्ते - २५

अ न्ता मा न्या मा र र ग न्ते च ति क दि छे व डे वि सार न य को स न्द र म नो ह र ज ग च नो ८

अवस्था जगामासुरतगर्भमनि कहिंछ वडो विस्तार मया को सुन्दर मनोहर जगामासुर
लापा को चित्रकारिते पिया को सुन्दर सेवान नमया को आरपु नृति महा उपसेर वासिमम
या को नाना नरदेका फल माला अतरः फले लय कर्म या को मिति गाउना लो सोभा कनपा

अथ विहित प्रवेसा विगीत लिते सुचा च वलिते सित्रा दिना लंकते. रम्य प्रोपा
न चत्तरे प्ररुमहा उपाधि पद्यान्विते संगीतांग विराजिते स्वमवने दिपप्रभा मासुरे
निसंकां सुरतं तथा मिलितं कथ्यात्म मंकां लया रूहे इति श्रीमधनं गरी विवाहाद्य
देस निरपणानामाष्टमं स्थलम् ८

या को आपना हवेति मोरुआ अपलि भावडा वडा धिया वाली उज्जाला मया को रस्ता जगामा
नमा कति संकां नमानि आप निस्सीमा यथेष्ट सुरतगर्भ रूहे इति श्रीमधनं गरी नामा
यमा विवाहादि निमित्त कं न्याचर कास्तथा प्रमृति कहिया को अष्टमं स्थल समाप्त मयो ८

अव अंक माला चंवन नविशत यं नलो को कन के ससेच प्रमृति वाह्य विलासना रिशुरतगर्भ
लुधे आनन्द हयै नतल अर्थ अंक माला प्रमृति काने कहिं छुवा मवा कला माके सत मया काम
धले यदि लेवा ह्य सुरतगर्भ तिवा ह्य सुरत मापहि लो अंक माला काने कहिं छुवा मवा अंक माला

अथ वाह्य संज्ञा विधि मनिमान् प्रमो गधर्व कां सुरतं संविध चित्तकांतया परितं मया
मेव पाडिने प्रथमने प्रनिगद्यते दृष्टवा १ दृष्टा विरुं तिलतं उलाख्यं लातादि कां जाधन
विचकोच उरु पगडा ह्युड चनी रेत खाष्ट मं वध्वरि वेष्टिं रं स्यात् २

तपनि आथ प्रकार को मनि जान १ अव आठ प्रकार का अंक माला को नाम कहिं छुवा दृष्टा
दिरुना मा १ जिलत एउला नामा २ ला लाठिक नामा ३ जां धन नामा ४ विधेक नामा ५ उरु पगडा
नामा ६ नीर क्षिर नामा ७ वध्वरि वेष्टित नामा ८ अंक माला वायति आठ नाम जानु २

अवधुपुंसा आ ८ लोक मा एव लोक ले एव एव अंक मा एव लोक मा एव कदिह श्रीले भा पूर
एव गो डाले पुरुष का गो डाले वि अने की गो डाले पुरुष का निग्र मा रा वि थ मा न वाई हदन मोला हे रो व ह्य मे न
रे अवन गो र्दे श्रीले डु वे हा त ले पुरुष की आ ति ग न हो ग र्दे सो ह द्या वि र ह्य ना मा जा न ३ श्रीले पुरुष

२९

अथ परिर भ लक्ष नानि - चर न कम ल व मे नां दिना क्र म प म उर पर थ व र्दो र
जा ना अ य ती न ह र म त र मि व न्ता व ल्या पी अ उ ते न्त मा ली व थि न मि ह र
नी न्ते त दि ह द्या दि र ह म ३ उ ज ग ह वि प र्थ यं मि थौ ध र्थ ये चे नि थु नं ध नि अ ल म
नि ल ह ए डु ल म सं कं त द परिरं न क थ य नि ह र

उ वे ले पि ८ पी ८ जो र आप ना अ नो प प दि ह त ले गि स्त्री ले पुरुष ला ई पुरुष ले
स्त्री ला ई जो आ रि ग न ग रि ह् सो नि ल तं ड ल ना मा अंक मा एव जा न् ४

नि चार संग नि चार आ र वा संग आ र वा गं ड स्थ ल संग ग ड स्थ ल मुख संग मुख
नि ल्या ह्वा ति हा त संग हा त जो रि स्त्री पुरुष डु वे ले व डाल म व म मे जो आ ति ग न

२९

मि थौ ल ल ला ग दि के थो ल वं क ह् दा ह् व द्नी मि थु नं दौ ण र सा ति र कं थ दि नि म
रं गं ल ल ला धि कं तं प्र व र्द न्ते स न्त ५ ज द न प रि म र थं थो गि के स स्व म र्नु नि ज म
ज ल पि का न्धां गा ड मा तिं ग प रा गा न ए लि म व स न के सा चं व न य त्र क थ्या ति पुरु मि
ह प रि रं न जा द न न व द नि

॥ रि म्ह सो ला ला टि क ना मा अंक मा एव जा न् श्रीले आप न चा क पुरुष का डु वे ति
ग मा रा पि व सिं व डालि ले सि र ते स व स्व कां प न ग रि डु वे हा त ले पुरुष ला ई सा ठो ज
ध्वा ई चं व न ग र्दे जो आ रि ग न ग रि ह् सो जा द न ना मा अंक मा एव जा न्

श्रीचुवनगौरीजोआलिं॥नगारिं॥सो॥जो॥घननामा॥ओं॥कमालजानु॥ ६

जोनेकामार्गपुरुषकनअकस्मात्पछिवा॥आइनेत्रचाकि॥समलेपि॥पाद्योचिदिं॥
५२ पुरुषलेपनिरसवसमै॥पछिहा॥तलेगिजो॥रि॥नगारिं॥सो॥विचकनामा॥ओं॥कमालजो
स्थितपतिमिलितनेत्रयाम॥पञ्चात्पविच॥वनिता॥कचाम्याम॥गृहात्पसोता॥
मपि॥विचकनामा॥लिगां॥न॥त॥न॥मुनिनि॥पुष्टि॥म॥७॥७॥दुमकामो॥नम॥यि॥नो॥ग॥ना॥
या॥उरु॥या॥म्बो॥रु॥यु॥गे॥न॥प॥त्र॥आ॥पि॥ड॥ये॥कां॥त॥उ॥दि॥रि॥ने॥त॥दु॥रु॥प॥रु॥दं॥परि॥रं॥
ननिजानु॥७॥काम॥र॥स॥म॥त॥न॥या॥कां॥पु॥रु॥प॥ले॥उ॥ना॥प॥ना॥दु॥इ॥ति॥ग्रा॥का॥मां॥कु॥मा॥
स्त्री॥का॥उ॥इ॥ति॥ग्रा॥॥वि॥सा॥ढा॥द॥वा॥ई॥स्त्री॥ला॥ई॥पु॥रु॥प॥ले॥जो॥आ॥लिं॥॥न॥गारिं॥॥सो॥उ॥रु॥प॥रु॥दं॥
मा॥आ॥लिं॥॥न॥जानु॥ ८

स्त्रिलाईआपनाकापमाराधि॥अथवाविछो॥उनामा॥युताई॥सामने॥उल्लाई॥हा॥तले॥सा॥ढो॥अ॥
वा॥ई॥आ॥प॥रु॥स॥व॥स॥रि॥संग॥मि॥लाई॥रु॥के॥सरि॥र॥म॥या॥ज॥सो॥गारि॥जो॥आ॥लिं॥॥न॥गारिं॥॥सो॥नी॥र॥सी॥र॥ना॥मा॥
ओं॥क॥य॥त॥ले॥प॥ति॥मं॥मुख॥स्थां॥कां॥तां॥म॥मा॥लिं॥ग॥ति॥य॥त्र॥गा॥रु॥मि॥थ॥प॥वे॥सं॥क॥र॥ने॥नि॥जो॥
५२ स्थास्त्री॥नी॥रं॥पु॥रिं॥ने॥त॥त॥त॥त॥व॥स्त्री॥व॥सु॥य॥सर॥लां॥ग॥य॥ष्टिं॥प॥ति॥मं॥मा॥लिं॥ग॥ति॥य॥न॥का॥
नाः॥सं॥चुं॥व्यं॥रा॥गा॥त्का॥त॥म॥न्ध॥मी॥त्का॥पौ॥तां॥७॥चै॥व॥द्व॥री॥वे॥ष्टि॥नं॥त॥र॥ १० १०

ओं॥क॥मा॥ल॥जानु॥त॥ल॥ह॥र॥ले॥रु॥क्ष॥लाई॥व॥दु॥धो॥गै॥वे॥हि॥चुं॥व॥न॥गौ॥री॥पु॥रु॥प॥ले॥आ॥प॥ना॥व॥ढो॥कि॥
दिं॥या॥का॥वे॥ध॥ना॥ले॥मु॥से॥मु॥से॥सी॥सी॥य॥सा॥स॥क॥ग॥दिं॥जो॥स्त्री॥उ॥भी॥या॥का॥पु॥रु॥प॥ला॥ई॥आ॥लिं॥॥न॥गौ॥री॥
+ सो॥व॥स्वरि॥वे॥ष्टि॥न॥ना॥मा॥ल॥हो॥न॥नि॥जानु॥ १० - १० १०

90

2.

卷之四

五

पका मुखनित्रागिआकलेपनिआवाविमलिनचलनैपुरुषकोमुखस्त्रीलेचुवनगर्ज्जी
छ. सोधीकानामाचुवनहो १५ स्त्रीकापछिलनिरहिपुरुषलेस्त्रीकोचिउयोहातलेसमानि
मेछीतहसितस्त्रीकोतहोचुवनगर्ज्जीयोनिथकाचुवनहोभनिकचिओहहस्तोमनाको १६

छ

स्त्रीकाहातलेपुरुषकोतहोचुवनगर्ज्जीपुरुषलेपनिहातलेस्त्रीकोतहोचुवनगर्ज्जी
चुवनगर्ज्जीहोस्त्रीकानामाचुवनहो १६ भनिभनिओहहस्तोमनाको १७ स्त्री
लेआपनाहातलेचुवनगर्ज्जीओहातलेचुवनगर्ज्जीपुरुषकोचुवनसमाइजिआका
दलेहिस्त्रीमपनातिलेचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीकातस्तपिचुवनगर्ज्जी
तपनीनेरिसुत्रोचुवनगर्ज्जीपरिचुवनगर्ज्जी १७ आपापपतलापमाटपपुकरा
तिमंउकेननारि जिहाप्रदेलेनचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी १८
प्रवाचरवाचरसुचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी
लेचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी
लेचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी
६८-पातोसंपुनामाचुवनगर्ज्जी १९

छ

रवानभोआपनापुसलेसुखसंगसुतीरधाकिवडादिद्रामापनाकिस्त्रीकनेअकरमातचैरे
रमाकहिडुलिफिरिआयावापुरुषलेचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी
संपाप्तिनिद्रारहसिस्वकाताचिरागतचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी
चुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी
अकिचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी २१

२१

अचिकरसध २० स्त्रीलेआपनाहुईचुवनगर्ज्जीपुरुषकासुखमाहुईचुवनगर्ज्जीपुरुषका
लेपनीपिडनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जीचुवनगर्ज्जी २१ २१

अधिकारसंघ २० स्त्रीले आप्राहुई वरुले पुरषका मुखमा हुई वरुमा पनी पीडा गरि जिमा
लेपनी पिडन गरि जुवन गरि उमानं यपाई स्त्रीले नानु मुमी दनामा जुवन हो २१ २१

अवनवत्तवाहुन्पा ७५ से अवनवत्तवाहुन्पा ७५ स्त्रीले वदो गर्वमानिरहामा स्त्रीसंगपरिलेने
आश्रितगदिविरहमे कनमे दनयामा परे सजाउछुनन्यमागो आया मापनि आ पु पा
उदवसंकिना नखदान पुन तिले मात्र स्त्रीलाई प्रसन्नगाराहुन्पा ७५ विष्णुमगन्या विषयतमा

६५ अथनखदानामिधानं प्रीवाकोरुजधनतन ६६ कस्ताहत्याश्र्यां डगलेकोनस्थः स्व
सुमानेन वीनसुरीते विरहे प्रनामे दवसंयेथ उचिरलोचमये प्रयोजमा २२

उ. पुननि कोलाय च दामायति अवसरमा गतामाह । तमा नियामा जांचमा मनमा पिठमा दामा
योमा गंडस्थलमा दामिमा इति जगामाह । तले स्त्रीलाई तीषान पस्तगाउचु सावितकोन्यागुला
चलोले

अवनवत्तकीतारिफगारिछ नखलाउदोरे खानपु १ नखनिर्मस्तके २ नखकाका निचडो ३ नख
४ वरु ५ नखमपु ६ पुनखसाहु ७ छे नखकायति छेरे मे दे कागुला कोमसा खजान्या हरले का
६५ निरेखतानिर्मितो जवसखं वविषाउता न्वसुहि तवमेव अमर्दि चंचेति ग्रामनखानां दुधैः पडु
माकिल मसात्रे २३ अथकोरखंकतरोमहर्षसमर्पितं गंड २४ अथचोरेय यत्कर्मसंपूर्ण नख
+ याकाह २३ गंडस्थलमा स्तनमा तलो वरुमा लेखानपन्या २५ अतं विज्ञातये वछु रितं वदसि २६
रोमठाडा हुन्पा गारि न्याये ओलाका नखलाउचु जो छे दु रितमा मानखदान हो २७ २७

गस्ता मास्तननामा देहा नखलाउचु उरु अर्धचन्द्रनामा नखदान के छे गस्तामा रसानमा दामने
हि सोमे नखलाउचु २८ भंगलनामा नखदान के छे मे नि काममा स्तकोलाव जावला पडित न
मे छे २५ मिरमाति ग्रामा नगमा स्तनमा नखलाउचु इकनला याकाठा २६ पिडु २६

६६ प्रीवाकोरेवकनखप्रदोरोदतोर्वत न्नाखउदीरितोसा इत्येवमेतामिमुखं
पु पुन्यात्तपावचाभाडलकं वधति २५ द्विन्यं गताय विचरपनावपु हारो नवे
२७ अक्रवयलापमपितोय रेखा दयं मदनकलिकला विस्ति डो प्राहु सोमे वत
यां हिनाववमावम २८
पिडुइतिन अं ७ लन २५ न्या उ पा माहुई रेखापन्या गिर् रतोका नोपवका मवे रतोलाहु
न्या पडित हे रलो मरणा नामा नखदान मे नि याकोध २६ २६

दातमाकेहंरंगगाउनालेचहमविदनायेपियाकावरोवरपातोमरपीकावाहापोलानातप
निपापानयाएवसातारकायातवाटयहंनहन घानाहोतीदवासेहकाकाणावाहिरद
पनामाइलीग्याएसाधोतनानिकाऊंछन ३१ तदनवठमापानकोरामात्रउन्मागिरि
एसासुतनीचतासमानाहठाअमुधमासमिधाममास दतापुसकाअप्रिधरि
कारलवाहामलिनानिन्धा ३१ अथस्थितयागमात्रकरदण्डादिलगु
हुदसनह्दयांडायेडनाधियमुखुनाकमुचनेउये ३२
मलागाईसुसोसुसोकोकनुरयोउकनीमायांतकीटोकाईहो वीरमागांडस्थलमा
डाकेन्यागारिदालगाईसुसोकोकनुरउछनकनीमायांतकीटोकोईह्दुनछनमनिजा
हेममंछन ३२ ३३

यतवठदुयिमिलाईसुसोसोकोकनुरजोतपोप्रवालमणिनामायांतकीटोकाई
योस्त्रीप्रतपडईकाअन्यामलेमात्रसाविंछअरयालिप्रतपेलाउकासंनर
ह्दयेयोजनविलेधमावाप्रवालपूर्वमनिरपोडकअन्यासपोगेनचव
मांसमाचनेनाम्यविनीधितमु ३३ अथरेतिलकेचकामिनारदयामे
खडंनेहोरी इतिवेहुसदिरितोविलेदसनम्यात्किरविन्दुनालाक
होयेन ३३ कामिप्रतपकालदावठमानिचारमापानेस्त्रीलेहुईदातमात्र
इप्रसोसुसोकोकनुरविन्दुनामायांतकीटोकाईहोसवेदातलगाईवठमानिचार
उसोसुसोकोकनुरविन्दुमोनायांतकीटोकाईहो ३४ ३५

॥३स्थलमाह्दतिमागागामानिचारमादातलगाईसुसोसुसोकोकनुरखंडाप्रव
मायांतकीटोकाईहोयोस्त्रीलेदातलगायामाप्रतपलेस्त्रीकागांडस्थलमाह्दति
लानिचारमाभंडलाकारपनागिरिदोतलोगाडनुरस्त्रीकामरिरेमावदो
कपीसवधोगलमालदेसेखंडाप्रकासादसनाप्रलेखामगनांडलाकारकाम
नानांमगाप्रसोमाजानेनितान ३५ अखलीगाडोदमनावलिदाकाजाह्दाम
रेनियतेचनतीप्रस्थानकालोममिहेउउतागकोखवंचेप्रवदतिवजा

लानेन चारना मंडलाकार पन्नागारवाला ३२ स्त्रीकासरि रमावडा
कपीसुवक्षोगालनाले सेखंडा प्रकं स्यादसना प्रलेखाम तन्मंडलाकारकाम
नानां मोगो सोनो ज्ञानोनितात् ३५ अख विसादो दसनावलि याकाचा रमा
रेत्रियते चनती प्रस्थानकालो मृति हेतु उता राको रल वं च प्रवदन्ति वजा
३५ एता माता मातिसा वाकला सुन्दरं पंत पुरुषले परदे सजान्ना वेला मा स्त्रीकासरि रमा
॥ ईचिहु (र-पागारि छपछि पारे सागामा पय हो समनानि मे तसो को ल वं चना मायं
मोपा ई हो ३६

३७५ कसमे न नादि ॥ हिचहिं छ चित्तानोला केवोला थोरो छुं ग्रीका कारस्ता स्त्रीका के लोडन
जी ७ ही हत्ता छि तो वडा डना निमि तचुं वनगर्भा वेला मा सु ते सु स्त्रीका के सपे चव
डा आनंद के छ प्रिति वडो तो वड छ ३७ पुरुषले डु वे हा तलो स्त्रीको के स सु ते सु सपे चव
पथ के स ग्रह नो दे स समे ग्या धना कचित्तनी लवन के सा प्रसता ल तनि जनाना प्रेम प्रह नी
वेने त मंद प्राधाने चुं वनयान काले ३७ चिकरा न्यारि कथ चं वतिकारु मे नयानि प्रियां यकि
मह नमि तथै कतो यदि हस्ते न तरंग रंग कम ३८ परिच्छेदा को न कृतता न दना तो यदि चार
यत्त्रियम् रानि के लिकला पकी विषय कथ य नी लि छुं जंग वदिव कम ३९
वनगर्भ रसमह सा कना मा के लो स चहुं छ य को हा तलो मा न स्त्रीका के सपे चव चुं वनगर्भ रस रंग रंग
ना मा के सपे चहो ३८ हातलो अलक के स कन पें चिका कमा गुर मै स्त्री लाई ममाती राधन रज
वलि काना मा के स को स चहो न निना ना ता हे का पुरा कला का धा ले ज्ञाना पडि हे त म छुं ३९

पुरा का वध त मा कान को न जिक का के स कन छे चि पुरुषले स्त्रीको चुं गनान स्त्री पनि पुरुष को चुं
वनगर्भ वडा प्रिति सागर पो का मा वतं मना मा के लो स चहो न नि जान ४० वाध पुरा का प्र का धा मे
कर्षा प्रोद स म क चान्वा र ह ध र सां चुं वति य न तागी यमि अवा गान् सुरा व ता रे का मा व न सं सकुच
गुह स्या ४० इति प्रदिष्टा कति चित् पु सि वा न मान म या वा हुर ल प्रकारः प्र सि च मा
परे न न द र्शना विस्तर सक याने ४१ इति गद न गरी गद स म नो ग नि रूप नं नाम

चैरहा का के हि का हि या ला क मा पु सि च न ज या का प्रकार प नि वडा वडा का म हं स्त्र मा
सा विस्तार हो ला प्रं प को मे नी का स का ले छ लिके मा न के हि या ४१ यो अ नं ग रंग ना मा प्र प मा वा ध
पुरा को प्रकार कहि या को न व म य लु स मा पु थो म त म र म ग र म क त प म मि ति ग्या दे व प लि पि
ति दे व र ४२ दे या सा हे वा से हो र ४३ र म र मा मि वा स वा र म र म